Madam, we had discused about the derogatory remarks against Mahatma Gandhi. We would Wse to know from the Home Minister—24 hours have passed whether any action has been taken or not. *(Interruptions)...*

THE DEPUTY CHAIRMAN: It is not that we will not discuss the Mahatma Gandhi issue. All of us are concerned about it (Interrup-*tions).*

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI: Madam we must know if any action has been taken. Twenty-four hours have passed. Has any action been taken or not? *{Interruptions).,.* We have a right to know that.

THE DEPUTY CHARMAN: I understand, it is not only you but also everybody in the House and outside is concerned about it. It is a serious matter. The Home Minister is there. As he has promised he must be doing something. (Interruptions) ..,

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI: I "vould like to know form the Home Minister whether he has taken any action. It is very simple. (Interruptions) ...

**श्री दिग्विजय सिंह (बिहार)** : मैंने यहां कहा है...मैंने यहां कहा है, इस हाऊस में कहा है मायावती और बाल ठाकरे ने जो कहा था । आप तो बात कहें, यह अलग बात है ? ...(**व्यवधान**)...

Dont blame. (Interruptions)... It was for you to say that at that point of time. *(Interruptions)...* You are also supporting that Govenment. *(Interruptions)...*

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): I only raised it. (Interruptions)... I only raised the issue. (Interruptions) ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Digvijay Singh... (Interruptions) ...

**प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली)** : जो मायावती ने कहा उसको आप सपोर्ट कर रहे हैं । इसका मतलब कांग्रेस पार्टी सपोर्ट कर रही है । जिनके खिलाफ माया-वती ने कहा उसी को सपोर्ट कर रहे हैं ....(**व्यवधान**).....

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now we are opening a new debate. *(Interruptions)...* Please baithye. (Unfortunately, it pains me to say... *(In-terruptions)...*Just one minute, Mar-garetji. it pains me really. Yesterday with such a good spirit Members showed their concern, regardless of their party affiliation, about Gandhiji and the Government also. The Home Minister Sahib was there. Please let us not have arguments on it. Let us not bring other issues, what somebody has said about what, who is supporting whom, etc., Let us not bring politics into it. Let us us take them as two different issues. We can discuss the matter at any other time. The Home Minister is aware of it. He will do the needful. Everybody knows his commitment to Gandhiji. He doesn't have to prove it in the House for us.

Shri Jaipal Reddy to speak on another matter.

**RE. THREAT POSED TO CHARAR-E-SHARIEF SHRINE BY MILITANTS IN KASHMIR**

SHRI S. JAIPAL REDDY (Andhra pradesh). Madam, I wish to bring to the notice of the House a serious situation that is, at the moment obtaining in the Valley of Kashmir. We are all aware of the manner in which the Government bungled very badly when it allowed the Hazaratbal Shrine to be seized by the militants. Any person with any political im-

agination could have easily surmised that the militants, next target would be Charar-e-Sharief. This is the second most important Shrine in Kashmir. It was the obvious target of the militants. Therefore, the question that arises is why the Government failed to foresee this, forestall this. It has been now under the occupation of the militants for a number of months now. I am told that it is a wooden strucfue and, therefore, highly combustible In addition to all this, last night a major fire swept over the whole town and the Security Forces are keeping a safe distance. We don" know... *(Interruptions)*. Safe distance not from the viewpoint of avoiding incidents but from the viewpoint of avoiding damage to the Shrine which 'S a laudable objective. But, the Government owes an explanation to us as to how i'n the first place 'his Shrine came to be seized by the militants. Now hundreds of houses have been gutted by the militants. While they gutted the houses, they are hurling all kinds j of clarges against the Gov- ! ernment of India and our j image as a nation will be damaged | in the comity of nations. Madam, we learnt from the Press that the Government of India or the Security j Forces there or the Gov- . * ernor there offered a safe passage to the militants. Who are these militants? They don't belong to our country. They belong to Pakistan. Some of them belong to Afghanistan. The Government of India is "Offering a safe passage to these militants. I don't know the names of the countries to which these militants belong. I am told that there are many militants after this fire who are still holed up in that Shrine. We are told that some militants have escaped under the cover of smoke. We would like the Home Minister to enlighten us as to why they failed in the first place and as to what he wants to do now. It is very clear that the militants created the incident of yesterday (a) with a view to forestalling the schedule of elections in Kashmir, (b) with a view to enabling the militants to escape and, lastly, of course, with a view to gaining huge publicity internationally for what they consider their cause. We would like the Government to enlighten the House as to what it wants to do. Will the Government be content with belonging only or will it also do something? Thank you.

श्री जनेश्वर मिश्र (उत्तर प्रदेश) : मैडम, यह बड़ा गंभीर मामला है जिसे जयपाल रेड्डी जी ने उठाया है । मैं नहीं जानता कि भारत सरकार इस मसले पर कितनी गंभीर है । करीब 800 मकानों में आग लगी है और अखबारों की रिपोर्टें जो आ रही हैं, उनमें एक भी आदमी के मरने की खबर नहीं है । ये आतंकवादी करीब दो महीने-तीन महीने पहले से वहां डेरा जमाए हैं । जिस दरगाह के भीतर और इर्द-गर्द वे फैले हुए हैं, उस दरगाह के 40 मीटर की दूरी परमीटर में जान-बूझकर कह रहा हूं, आग लगी हुई है । लकड़ी की दरगाह 40 मीटर आग पकड़ने में कोई बहुत परेशानी नहीं होती है आजकल के मौसम में खासतौर से । चरार-ए-शरीफ के लोगों को उन लोगों ने बहुत पहले, सरकार को जानकारी थी, सैनिक सूत्रों को जानकारी थी, उन लोगों ने बहुत पहले कह दिया था कि तुम मुहल्ले को खाली करके चले जाओ । इस जानकारी के बावजूद भी सरकार की तरफ से, इनके खुफिया तंत्र की तरफ से, सैनिक शक्ति के खुफिया तंत्र की तरफ से कोई भी कार्यवाही नहीं हुई । इससे साफ लग रहा है कि भारत का खुफिया तंत्र जिसमें मामूली खुफिया तंत्र भी होगा और सैनिक खुफिया तंत्र भी होगा एक महान निकम्मेपन का रोगी हो गया है क्योंकि दो हफ्ते पहले उन लोगों ने कहा था खाली कर दो । इस समय चरार-ए-शरीफ की दो तिहाई आबादी लगभग खाली कर चुकी है । एक तिहाई

[ श्री जनेश्वर मिश्र ]

लोक रूके हैं । सैनिक सूत्रों ने कहा है कि एक तिहाई लोग उनकी बात नहीं मान रहे हैं । इसलिए उन लोगों ने कहा था कि जल्दी खाली करो, अब आग लगाएंगे यानी तो तिहाई लोग मान चुके थे । मायने अगर निकाले जाएं सैनिक सूत्रों की भावनाओं के तो यही निकलने हैं कि एक तिहाई लोग शेष रह गय हैं दरगाह वाले कस्बे में । उन लोगों ने बात मानने से इन्कार कर दिया । इसलिए इन लोगों ने आग लगा दी। दो तिहाई लोग जो पहले से खाली कर चुके हैं वे लोग उन उनकी बात मानने के लिए तैयार थे, मौहल्ला खाली कर दिया । यह इतना नाजुक मसला है कि यह सरहद से नहीं बल्कि जब से हम लोगों का देश आजाद हुआ तब से यह मुद्दा छिड़े का छिड़ा रह गया । इस मुद्दे पर हिन्दुस्तान की राजनीति करने वाले लोगों ने समय समय पर अपनी राजनीति की गोटी बैठाने की कोशिश की है । समय समय पर यह उभरता है । हंसी तो तब आती है जब अखबारों में छपा है सैनिक सूत्रों ने चूंकि महीने भर से, 15 दिन से आतंकवादियों की खबर अखबारों में नहीं छप रही थीं, उनको हताशा हो रही थी कि हमें कोई महत्व नहीं मिल रहा है, आतंकवादी सड़कों पर घुमते थे, उनका कोई नोटिस नहीं ले रहा था, वह कोई हरकत करना चाहत थे । हमारे खुफिया महकमों को यह अन्दाज़ा होना चाहिये कि आतंकवादी रोज हरकत नहीं किया करते हैं । इतना तो मान कर चलना चाहिय । अपना मौका ढूंढा करते हैं। सब लोग जब, लापरवाह हो जाते हैं, तब अपनी हरकत करने हैं । इसको हमारा खुफिया महकमा गृह मंत्रालय का जो भी विभाग इसे देख रहा है, वह समझ नहीं पाया । 15–20 दिन तक आतंकवादी अगर उदास दिखाई पड़े उन्होंने कोई हरकत नहीं की तो इन लोगों ने मान लिया कि उनका मनोबल टूट गया है । 10 दिनों तक आतंकवाद की कोई घटना नहीं होती तो हिन्दुस्तान की तरफ से बड़ी बड़ी खबरें छपने लगती हैं कि हमने काबू पा लिया है । उसके एक महीने के बाद कोई घटना घट जाती है तो कपकपी आने लगती है । हमने पहले भी कहा था और अब फिर दोहरा देना चाहता हूं कभी कभी हम लोग कड़ी भाषा बोल दिया करते हैं । बड़ी जगहों से कड़ी भाषा बोलना हम राजनीति करने वालों का काम करने का ढर्रा सा बन गया है, आदत बन गई है । हम को अच्छी तरह से याद है दिल्ली के लाल किले से भारत के प्रधान मंत्री ने घोषणा कर दी कि कश्मीर का जो हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में है, उस पर हम अपना कब्जा ले लेंगे । देश के कई लोगों ने खासतौर से सिकन्दर बख्त जी की पार्टी के लोगों ने प्रधान मंत्री जी को बधाई दी कि बहादुरी का काम किया है । लेकिन दिल्ली के लाल किले से 15 अगस्त को ऐलान करके उस जमीन को कब्जे में लिया जा सकता है ? उसके दूसरे दिन वहां के भूतपूर्व प्रधानमंत्री ने कह दिया कि हमारे पास ऐटम बम है, आना तो देख लगे । बातों को जान बूझकर के उलझाने की कोशिश भारत की सरकार और पाकिस्तान की सरकार कर रही है । मैं आरोप लगाना चाहता हूं कि इस समय जो बलूची नेता आतंकवादियों का नेता, रहनुमा यहां आकर के छिपा हुआ है और भारत सरकार के पुलिस, कश्मीर प्रशासन की पुलिस के उपाधीक्षक के घर पर टिका हुआ है । सैन्य सूत्रों का खुफिया महकमा बता रहा है कि वह आंतकवादियों का सरगना टिका है। पुलिस का अधिकारी दरवश उसको छिपाए हुए है या अपनी मर्जी से, इसकी अभी सही जानकारी नहीं मिल पा रही है । इतना रद्दी किस्म का, लचर किस्म का हमारा खुफिया विभाग है । इसका आप अंदाज लगा सकती हैं और देश लगा सकता है । मैं चाहूंगा कि इस किस्म की स्थिति को निपटाने के लिए भारत सरकार अपनी तरफ से कोशिश करे । एक बार फिर वहां के राज्यपाल के सलाहकार और पुलिस के विशेष अधिकारी वहां चरारे शरीफ पहुंच गए हैं । लेकिन उनमें से आज तक किसी न उस पुलिस अफसर से यह जवाब तलब नहीं

किया कि तुम्हारे घर में यह आतंकवादियों का रहनुमा बलूची कैसे छिपा हुआ है। आज तक कोई कार्यवाही उसके खिलाफ नहीं हुई है। इससे साफ लगता है कि राज्यपाल का सलाहकार, काश्मीर का प्रशासन जो दिल्ली सरकार के इशारे पर चलता है और वह आतंकवादी जो वहां के पुलिस अफसर के घर में छिपा है, इन सब में कहीं न कहीं कोई रिश्ता है कि सरहद पर ऐसा तनाव बनाए रखो ताकि हिन्दुस्तान की जनता अपनी गरीबी के सवाल पर, अपने पेट की नौकरी के सवाल पर, मुल्क के बुनियादी उसूलों पर गम्भीरता से सोच न सके और निर्णय न ले सके। इस तरह की साजिश चल रही है। इस तरह की साजिश दिल्ली की तरफ से चलती है, इस तरह की साजिश पाकिस्तान की सरकार की तरफ से भी चल रही है और देश के दिमाग यह खबर पढ़कर पगला जाया करता है, झूम जाया करता है। हम चाहेंगे कि ये साजिशें दोनों देशों की सरकारें बंद करें। इसमें एक स्पष्ट राय रखें। आतंकवादियों से कहा जा रहा है ..(समय की घंटी) मैडम एक मिनट।

उपसभापति : मिश्र जी, मेरे पास सात नाम हैं। तो खत्म.. (व्यवधान) कीजिए।

**श्री जनेश्वर मिश्र :** आधे मिनट में खत्म कर दूं।

आतंकवादियों से कहा जा रहा है, वहां के प्रशासन के जो लोग हैं, सैनिक प्रशासन के लोग हैं, गृह मंत्रालय . प्रशासन के लोग हैं वे उनसे बार बार हाथ जोड़कर प्रार्थना कर चुके हैं कि आप सुरक्षित सरहद के बाहर चले जाइए। मुल्क की, भारत माता की, उसकी तस्वीर की उनके नक्शे की हिफाजत किसी विदेशी हमलावर या आतंकवादी के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करने से क्या हुआ करती है, इस पर भारत सरकार को जवाब देना पड़ेगा। खुले दिल से जवाब देना चाहिए। इस पर खुलकर बहस होनी चाहिए। मुझे अफसोस है कि यह जीरो आवर में ऐडमिट हो गया है। मैं चाहता था कि इस पर लम्बी चर्चा होती दूसरे ढंग की नोटिस में। सरकार इसमें जवाब दे लेकिन यह बन नहीं पाया। बहुत ही एक मामला फंसा है इसलिए मैं निवेदन करूंगा कि कोई दूसरे किस्म की नोटिस जब हम लोग दें तो उसको एडमिट करें ताकि सरकार भी इसमें इन्वाल्व हो और उस पर बहस हो। यही निवदन करते हुए अपनी बात खत्म करता हूं।

**प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली) :** उपसभापति महोदया, इसी हाउस में तीन बार मैंने और सिकन्दर बख्त जी ने इस सवाल को उठाया था और चेतावनी दी थी कि चरारे शरीफ में आतंकवादी इस तरह की घटना करने जा रहे हैं। परन्तु उसका कोई नतीजा नहीं निकला। कहा यह गया कि इसलिए कोई कदम नहीं उठाया जा रहा है कि कहीं यह मामला इंटरनेशनलाइज न हो जाए, कहीं चरारे शरीफ की मस्जिद को कोई नुकसान न पहुंच जाए, कहीं वहां पर जो लोग बैठे हुए हैं उनको कोई ऐसा मौका न मिल जाए कि वहां पर आग वगैरह लगा दें। उपसभापति महोदया, यह हमने कहा था कि ये सब चीजें होने वाली हैं। मुझे सबसे बड़ा आश्चर्य इस वक्त तीन बातों का हो रहा है कि जिन्होंने 800 घर जला दिए, जिन्होंने वहां पर पचासों आदमियों की हत्याएं कीं, जिन्होंने वहां पर अपहरण किए, जो हिंदुस्तान के खिलाफ पूरी साजिश कर रहे हैं उनके लिए कल फिर रिपीट किया कि उनको हम सेफ पैसेज दे रहे हैं। कुल मिलाकर मस्तगुल और उसके साथ 30–40 लोग हैं, विदेशी मर्सीनरीज हैं, जिनकी संख्या 30–40 या 50 है। उनको हम सेफ पसेज दे रहे हैं, आने जाने का किराया देने की बात करते हैं, उनको एयर कंडीशन गाड़ियों में बाहर भेजने की बात करते हैं। यह किस तरह की हिंदुस्तान की सरकार चल रही है। यह मस्तगुल किसके यहां छिपा हुआ है। वहां की पुलिस

के डिप्टी चीफ के घर से अगर ? हमारी सेना यह बात कह रही है । उसके बाद भी आप कहते हैं कि जाना चाहते हैं तो बड़े आराम से चले जाओ । 10 लाख की हमारी दुनियां की सर्वश्रेष्ठ सेना है । उस पर हमारे यहां इतना क्या खर्च हो रहा है । वहां पर 30-40 लोग हैं और हम कह रहे हैं हाथ जोड़कर कि तुम चले जाओ मेहरबानी करो हम तुम्हें पाकिस्तानी बार्डर तक सही सलामत छोड़ देंगे, इस बात की गारंटी करते हैं । सरकार को शर्म आनी चाहिए, इतना ज्यादा घुटने टेकने की बात, सरकार को हस्तीफा दे देना चाहिए, फौरी तौर पर छोड़ देना चाहिए । आखिर यह क्या बात है कि विदेशी पहले हजरतबल में, फिर चरार-ए-शरीफ में, अब तीसरा अगर मान लो दिल्ली की जामा मस्जिद में आकर कोई आतंकवादी बैठ जाए तो क्या आपका यही स्टेप्स होगा कि हम कोई कदम नहीं उठायेंगे ? आप यहां पर जितनी चाहे हत्याएं कीजिए, हम आपको वहां पर पाकिस्तान तक भी जाने के लिए छोड़ देंगे ? क्या सिग्नल आप देना चाहते हैं कि किसी रिलिजियस प्लेस में अगर कोई आतंकवादी हत्यारे आकर छिप जाएं तो हम कदम उठाने की बजाए उनके आगे घुटने टकेंगे और उनकी रिक्वेस्ट करेंगे ? अगर आप यह सिग्नल देना चाहते हैं तो जो चरार-ए-शरीफ में आज हुआ वह हमेशा इसको रिपीट करते रहेंगे । उपसभापति महोदय, मैं यह भी बात कहना चाहता हूं कि यह जो भारतीय सेना को बदनाम करने की साजिश थी यह भी सेना को मालूम है, एक महीने से हम कह रहे थे कि भारतीय सेना को बदनाम करेंगे, पब्लिसिटी लेंगे और कहेंगे कि आग भारतीय सेना ने लगा दी और यही बात उन्होंने रिपीट की है । माइन्स बिछाई हुई हैं । इसलिए हमें खुले तौर पर दो टूक फैसला करना चाहिए एक तो यह कि इनको फ्लशआउट करें, आज भी वह आतंकवादी वहीं छिपे हुए हैं, हमारी सेना उसके अंदर नहीं गई है, चारों तरफ दूर-दराज के इलाके में जाकर बैठ गई हैं और कोशिश कर रही है कि उनको वहां से वे अपने आप निकल जाएं । इसलिए या तो उनको फ्लश आउट करिए, उनको निकालिए या फिर भारत सरकार यह साफ तौर पर कह दे कि हम वहां पर हकूमत करने में नाकाम हो गए हैं और हम हकूमत नहीं कर सकते । ईश्वर के लिए उनके हाथ जोड़ने के बजाय देश की जनता आपके हाथ जोड़ कर कह रही है या तो कश्मीर को आतंकवादियों से खाली कराओ या फिर खुद गद्दी छोड़ दो और यहां से चले जाओ । इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है ।

**श्री ओ0पी0 कोहली (दिल्ली)** : माननीया उपसभापति महोदया, चरार-ए-शरीफ में हजरतबल दरगाह का इतिहास दोहराया जा रहा है । स्थिति बहुत गंभीर हो गई है, लेकिन सरकार सारे मसले पर उतनी ही अगंभीर बनी हुई है। सरकार ने जिस तरीके से टोटल लैक आफएक्शन, कोई कार्यवाही न करने का इरादा कर रखा है, उससे सरकार की स्थिति देश की जनता की नजर में और दुनियां की नजर में बहुत ही हास्यास्पद हो गई है। घाटी में जबर्दस्त तनाव है । चरार-ए-शरीफ में 8 मार्च से आतंकवादी डेरा डाले बैठे हैं । सरकार ने इस बीच में क्या किया है ? हाथ पर हाथ धरे बैठी है। आतंकवादी गोलीबारी कर रहे हैं । 800 से ज्यादा घर जल गए हैं ! आतंकवादी सुरक्षा बलों पर राकेटों से हमला कर रहे हैं। हमारे सुरक्षा बल इस दुविधा में हैं कि वे कोई ऐसा कदम नहीं उठाएं जिससे पवित्र दरगाह को नुकसान पहुंच जाए और उधर आतंकवादी पवित्र दरगाह को फूंक डालने तक को तैयार बैठे हैं ताकि उनके इरादे पूरे हो सकें । आतंकवादियों के इरादों की क्या सरकार को कोई जानकारी नहीं है ? क्या हमारे खुफिया तंत्र को आतंकवादियों के इरादों की कोई जानकारी नहीं है ? क्या आतंकवादियों का इरादा पवित्र दरगाह को नष्ट कर डालने का है, यह सरकार को पता नहीं ? क्या चरार-ए-शरीफ को कब्जा किए हुए आतंकवादी पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई0एस0आई0 की किसी बड़ी योजना को पूरा करने में लगे हैं, इसकी सरकार को जानकारी नहीं

है ? इन हरकतों का ताल्लुक काश्मीर के संभावित इरादों से है, क्या सरकार को इसकी जानकारी नहीं है ?..... **(व्यवधान)** महोदया, इस सारी हालत में, इस सारे प्रकरण में हुर्रियत नेता अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने में लगे हैं । जम्मू-काश्मीर सरकार के प्रवक्ता और सुरक्षा विभाग के प्रवक्ता ने कल की घटना के लिए आतंकवादियों को दोषी ठहराया है । लेकिन दूसरी तरफ हालत यह है कि जम्मू-काश्मीर के गवर्नर आतंकवादियों की मिन्नतें कर रहे हैं, चिरौरी कर रहे हैं कि ये हथियार रख दें तो उन्हें सुचेतगढ़ सीमा तक सुरक्षित ले जाकर छोड़ दिया जाएगा जहां से व अपने-अपने घर को सुरक्षा से जा सकें । स्थिति ऐसी बना दी गई है जिसका कि सुरक्षा बलों के मनोबल पर और देश की जनता के मनोबल पर बहुत ही भयंकर असर हो रहा है । जम्मू प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री गुलाम रसूल कार की पब्लिक मीटिंग पर आतंकवादियों ने हमला किया और वे बाल-बाल बचे । महोदय, यह सारी गंभीर स्थिति है और इस पर सरकार का रवैया क्या है ? सरकार चिरौरी कर रही है, मिन्नतें कर रही है और वहां रोकथाम की कोई कार्यवाही नहीं कर पा रही है, वह जानकारी हासिल नहीं करती है और खुफिया-तंत्र एकदम बेकार हो रहा है ।

महोदय, स्थिति का तकाजा है कि कड़ी कार्यवाही की जाए, चिरौरी बंद की जाए, मिन्नतें बंद की जाएं और आतंकवादियों को दरगाह से बाहर निकाला जाए । महोदय, न तो चिरौरी इसका हल है और न जम्मू-काश्मीर में चुनाव करवाना इसका हल है । हल केवल एक संकल्प, एक इच्छा शक्ति और आतंकवादियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करना और उनको इस दरगाह से फ्लश-आउट करना है । मैं सरकार से जानना चाहूंगा कि वह इस प्रकार की इच्छा-शक्ति अपनाने की कार्यवाही क्यों नहीं कर रही है ? कार्यवाही करने से क्यों कतरा रही है ?

**सैयद शिब्ते रजी (उत्तर प्रदेश)** : मैडम, चरार-ए-शरीफ के जिस मसले पर हम यहां बात कर रहे हैं, इसमें दो राय नहीं हो सकतीं कि यह बहुत संवेदनशील और नाजुक मसला है और जब-जब ऐसे हालात पैदा होते हैं, हमारे दुश्मन इस पूरी कोशिश में रहते हैं कि कोई ऐसी स्थिति खड़ी हो और वह उसका अंतर्राष्ट्रीय फायदा उठा सकें । मैडम, हजरत बल दरगाह का जब मसला उठा था, उस वक्त भी ऐसा लग रहा था कि परिस्थिति बहुत विस्फोटक हो जाएगी और उस वक्त दरगाह को जबर्दस्त खतरा खड़ा हो गया था । मैडम, मैं याद दिलाना चाहूंगा कि उस वक्त जब चारों तरफ से यह दबाव पड़ रहा था कि सख्त इकदामात किये जाने चाहिएं और टेररिस्टस को फ्लश-आउट कर देना चाहिए, तो निश्चित रूप से, यकीनी तौर पर हम सब की मर्जी ऐसी ही थी, लेकिन जिस परिस्थिति में बंदरगाह थी और जिस परिस्थिति में आतंकवादी वहां पहुंच चुके थे, उससे हजरत बल की दरगाह को तो खतरा था ही, साथ-ही-साथ एक बहुत ही इमोशनल और जज्बाती मसला पैदा हो गया था, लेकिन हमारी पार्टी की सरकार ने इस नाजुक मसले को बहुत ही धैर्य और सूझबूझ के साथ सुलझाने की कोशिश की और हजरत बल के मामले में, वह चाहे किसी भी सूरत से कहा जाए, उसको भी विस्फोटक स्थिति जन्म लेने वाली थी, उसको रोकने में हमारी सरकार सफल हुई और हमने हजरत बल की दरगाह को मुद्दा बनाकर जो एक साजिश अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर की जा रही थी, उसको नाकाम बनाया । मैडम, चरार-ए-शरीफ के इस मामले में भी मैं कहना चाहूंगा कि हमारी फौजें वहां लगी हुई हैं । उन्होंने घेराबंदी कर रखी है, लेकिन उसके बावजूद भी वहां वाकयात हुए हैं जिनमें कि कहा जा रहा कई बहुत ही गंभीर मसला है और इसकी जितनी भी भर्त्सना की जाए, वह कम है ।

मैडम, इस मुद्दे पर मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगा सरकार से कि जो खबरें अखबार में छप रही हैं, उन पर सही ढंग से सोचने और ध्यान देने की आवश्यकता है कि वहां प्रशासन और फौज में इस मसले को किस तरह हल

**[ सैयद सिब्ते रजी ]**

किया जाए, इस बारे में कुछ-न-कुछ मतभेद पाया जाता है । यही वजह है कि पूरी सूचना मिलने के बावजूद कोई ऐसा कदम नहीं उठाया जा सका है जिससे कि इस दुर्घटना को एवाइड किया जा सकता । इसलिए प्रशासन और सैन्य-शक्ति को बैठकर ऐसी रणनीति बनानी चाहिए जिसके लागू करने से वहां पर जो सिचुएशन है, उसका हम ठीक तरह से मुकाबला कर सकें । मैडम, यह बात बहुत ही चिंता की है, जैसा कि हजरत बल के मामले में भी कुछ इस तरह की बात थी कि मतभेद पाया जाता था प्रशासन और मिलिटरी के मामलात में कि वहां कुछ हादसात ऐसे हुए । फिर अभी इस बात की घोषणा से की 5–5 हजार रुपए का एक्सग्रेशिया पेमेंट कर दिया जिसके मकानात जले हैं, उसके लिए मैं समझता हूं कि इससे भी को हालात में तब्दीली नहीं आएगी क्योंकि अगर वाकयी में मकानात जले हैं तो इंसान के लिए उसके घर-बार और गृहस्थी से बढ़कर तो कोई भी चीज कीमती नहीं होती । इस बारे में वहां के प्रशासन को सोचना चाहिए और एक्सग्रेशिया पेमेंट लोगों को दिया जाना चाहिए । इस बारे में भी काफी मतभेद हैं क्योंकि कुछ कहते हैं कि 500 घर जले हैं और कुछ कहते हैं कि 800 घर जले हैं क्योंकि वहां गयी दमकलों को भी आग बुझाने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा । मैडम, यह परिस्थिति अच्छी परिस्थिति नहीं है । मैं चाहूंगा कि इस मसले के ऊपर सरकार कोई वक्तव्य लेकर आए जिससे कि हम सब को पता चल सके कि काश्मीर के उस इलाके में कैसी परिस्थिति है? इसके अलावा मैडम बहुत से मीडिया हैं जोकि हमारे खिलाफ तरह-तरह का प्रचार कर रहे हैं । यदि बी०बी०सी० को सुनिए तो वह इस तरह का प्रचार करने में लगा है कि जैसे दुश्मन का रेडियो कर रहा हो । इस बारे में स्थिति साफ होनी चाहिए और सरकार को वक्तव्य लेकर आना चाहिए ताकि वक्तव्य के जरिए हम लोगों को पता चल सके कि किस तरह से सरकार इस गंभीर स्थिति से उभरने की कोशिश कर रही है ।

†[شری سید سبط رضی (اتر پردیش): میڈم - چرار شریف کے جس مسئلے پر ہم بحث کر رہے ہیں اسمیں دو رائے نہیں ہو سکتیں کہ یہ بہت سنویدن شیل اور نازک مسئلہ ہے اور جب جب ایسے حالات پیدا ہوتے ہیں ہمارے دشمن اس کوشش میں رہتے ہیں کہ کوئی ایسی استھتی کھڑی ہو اور وہ اسکا انترراشٹریہ فائدہ اٹھا سکیں - میڈم حضرت بل درگاہ کا جب مسئلہ اٹھا تھا اس وقت بھی ایسا لگ رہا تھا کہ یہ استھتی بہت وسپھوٹک ہو جائیگی - اس وقت درگاہ کو زبردست خطرہ پیدا ہو گیا تھا - میڈم - میں یاد دلانا چاہونگا کہ اسوقت چاروں طرف سے یہ دباؤ بڑھ رہا تھا کہ سخت اقدامات کئے جانے چاہئیں - اور ملیٹینٹس کو فلش آؤٹ کر دینا چاہئے - تو نشچت روپ سے - یقینی طور پر ہم سب کی مرضی ایسی ہی تھی - لیکن جس پرستھتی میں وہ درگاہ تھی اور جس پرستھتی میں آتنکوادی وہاں پہنچ چکے تھے - اس سے حضرت بل درگاہ کو خطرہ تو تھا ہی ساتھ ہی ساتھ ایک بہت ہی اموشنل اور جذباتی مسئلہ پیدا ہو گیا تھا - لیکن ہماری

†[]Transliter»tion in Arabic Staripfc

پارٹی کی سرکار نے اس نازک مسئلے کو بہت
دھیریئے اور سوجھ بوجھ کے ساتھ سلجھانے
کی کوشش کی اور حضرت بل کے معاملے
میں چاہے وہ کسی بھی صورت سے کیا
جائے - اسکی جو وسیچوئیشن استھتی
بننے والی تھی - اسکو روکنے میں ہماری
سرکار سفل ہوئی اور ہم نے حضرت بل
کی درگاہ کو مدعا بنا کر جو ایک سازش
انتر راشٹریہ استر پر کی جا رہی تھی اسکو
ناکام بنایا -

میڈم - چرار شریف کے اس مسئلے
کو بھی میں کہنا چاہونگا کہ ہماری فوجیں
وہاں لگی ہوئی ہیں - انھوں نے گھیرا
بندی کر رکھی ہے - لیکن اسکے باوجود
جو وہاں واقعات ہوئے ہیں جسمیں
کہا جا رہا ہے کہ کئی سو گھر جل گئے ہیں
یہ ایک بہت ہی گمبھیر مسئلہ ہے - اور
اسکی جتنی بھرتسنا کی جائے - وہ کم
ہے -

میڈم - اس مدعے پر میں صرف اتنا
ہی کہنا چاہونگا بھارت سرکار سے کہ
جو خبریں اخبار میں چھپ رہی ہیں -
ان پر گمبھیر ڈھنگ سے سوچنے اور دھیان
دینے کی آوشیکتا ہے کہ وہاں پر شاسن اور
فوج میں اس مسئلے کو کسی طرح حل کیا جائے
اس بارے میں کچھ نہ کچھ مت بھید پایا
جاتا ہے - یہی وجہ ہے کہ پوری سوچنا
ملنے کے باوجود کوئی ایسا قدم نہیں اٹھایا
جا سکا ہے جس سے کہ اس درگھٹنا
کو ایوائڈ کیا جا سکتا - اسلئے پرشاسن
اور سینا شکتی کو بیٹھکر ایسی رن نیتی
بنانی چاہیئے - جس کے ذریعے سے وہاں
پر جو سیچویشن ہے - اسکا ہم ٹھیک طرح
سے مقابلہ کر سکیں - میڈم - یہ بات بہت
ہی چنتا کی ہے - جیسا کہ حضرت بل کے
معاملے میں بھی کچھ اسطرح کی بات تھی
کہ مت بھید پایا جاتا تھا - پرشاسن اور
ملٹری کے معاملات میں کہ وہاں کچھ
حادثات ایسے ہوئے - پھر بھی اس بات
کی گھوشنا ہے کہ پانچ پانچ ہزار روپیے
ایکسگریشیا پیمنٹ کر دیا جائے گا جنکے
مکان جلے ہیں - اسکے لئے میں سمجھتا
ہوں کہ اس سے بھی کوئی حالات میں تبدیلی
نہیں آئیگی - کیونکہ اگر واقعی مکانات جلے
ہیں تو انسان کیلئے اس کے گھربار اور
گھرستی سے بڑھکر تو کوئی بھی چیز قیمتی
نہیں ہوتی - اس بارے میں بھی کافی
مت بھید ہیں کیونکہ کچھ کہتے ہیں کہ

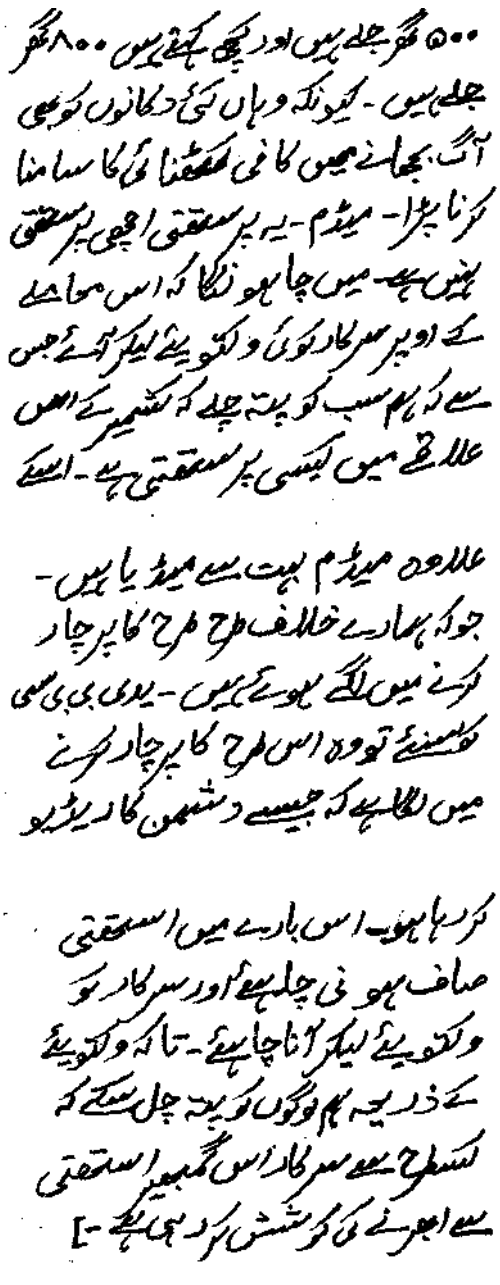

۵۰۰ گھر جلے ہیں اور کچھ کہتے ہیں ۸۰۰ گھر
جلے ہیں - کیونکہ وہاں کئی دکانوں کو بھی
آگ بجھانے میں کافی کٹھنائی کا سامنا
کرنا پڑا - میڈم - یہ پرستھتی ابھی پرستھ
نہیں ہے - میں چاہوں گا کہ اس معاملے
کے اوپر سرکار کوئی وکتویہ لیکر آئے جس
سے کہ ہم سب کو پتہ چلے کہ کشمیر کے اس
علاقے میں کیسی پرستھتی ہے - اسکے

علاوہ میڈم بہت سے میڈیا ہیں -
جو کہ ہمارے خلاف طرح طرح کا پرچار
کرنے میں لگے ہوئے ہیں - یدی بی بی سی
کو سنیں تو وہ اس طرح کا پرچار کرنے
میں لگا ہے کہ جیسے دشمن کا ریڈیو

کر رہا ہو - اس بارے میں استھتی
صاف ہونی چاہیے اور سرکار کو
وکتویہ لیکر آنا چاہیے - تاکہ وکتویہ
کے ذریعے ہم لوگوں کو پتہ چل سکے کہ
کسطرح سے سرکار اس گمبھیر استھتی
سے ابھرنے کی کوشش کر رہی ہے -]

SHRI JAGMOHAN (Nominated): Madam, anyone who knows the position should have anticipated that after what has happened in Hazarat. bal Charar-e-Sharief will not be far behind. It is very sad that during the siege, the so-called siege of 32 days, the situation was very badly mishandled—it was said that it was our victory—but the timidity and the hollowness that was shown at that time, it is th.3 same timidity whit they are exploiting now. They knew the weakness of the Government and, therefore, they have exploited this. This is the evil which is bound to recoil. This is the message of the history, this is the logic of history that if we continue with the same timidity and the same hollowness as we have adopted the same superficial attitude which had been adopted when this happened at Haza-ratbal, then it will happening at Charare-e-Sharief and then it will happen elsewhere also. You will not be able to control the situation. It is time that we corrected our attitude and were very clear about our fundamentals. Can the sovereignty of our space be compromised? Can we allowed the sovereignty of our space to be handled like this? Are we a nation or are we school boys? The issue is that 62 dreaded militants about whom we said that they were dreaded, whom we said that they were waging a war against the State not only internally but also with the connivance of the foreign power—the Government itself is making statement that they are waging war against the State—all those 62 militants were released, Is the Government implementing its own laws and its own Constitution? Is it possible that you compromise your laws to that extent? I would like to ask the Government to make a statement on those 62 militant, who were dreaded militants, whbim the Government itself described as dreaded and as having so much arms and ammunition from the foreign power. Where are those 62 militants? Their Telease has really led to more attacks on the security forces and, therefore, in 1994, the highest number of at-

†Transliteration in Arabic script.

[Shri Jag Mohan]

tacks with there on the security for-ces. We have seen that even on the Republjc Day, bomb explosions were taking place. This is a fall out of that attitude and then it was a real surrender Of the security forces which we proclaimed as victory. It was really a case of drinking seawater and shouting "lemonade". I cannot understand this. It is now a logical corollary, what is happen-in,? in Charar-e-Sharierf I know Charar-e-Sharief; I have been there a number of times before. It is very easy to control Charar-e-Sharief. There is a very small passage all round this: a road, then there is park behind it. Why could a small picket not be fixed there in advance? When I went there as Governor in 1990, there was no particular facility of Army. The first thing that I did was to take care of these mosques where these accumulations could take place. After so much of experience, after so many security forces at your disposal, you cannot even watch as to what is happening in Hazaratbal and what is happening in Charar-e Sharief. There are very open areas all around; a bus stand is there. Why cannot you just fix a few pickets there? When you have fixed pickets all over Srinagar, why could this not toe done in Charar-e-Sharief? You had experience of Sopore before you. It is a total surrender of judgment; it is a case of non application of mind. If you did not have the stamina to take action, why did you ask the security forces to stay one or two miles away? If you did not have the courage to face the problem, then you should not have surrounded it at all. I do not know why they surrounded the Hazaratbal at all if they did not have the courage and to take it to itg logical conclusion and settle it for once and for all. What is the psychological atmosphere that is being created? AU those militants

leaders, even those who were involved in heinous crime of killing four officers of the Indian Air Force, are out and they are moving around They are meeting the foreign presidents. They are going all around. And what psychological message is it giving to the masses there? It is bound to give a psychological boost to terrorism. What morale do our officers and their wives and the widows of those who were killed have? They are now drinking coffee and tea with the presidents of foreign countries. I do not know what has happened to us. We have become a confused nation. We have totally surrendered our fundamentals. We do not know what we are doing. Therefore, when we have lost elections, we are bound to face music. Now, who is going to suffer for these 800 houses or 500 houses, or whatever it is? Everywhere the same thing is repeated. I would request the Government—I don't want to take more time of the Zero Hour—I would request the Govemment to make a comprehensive statement, to give a proper background material on what has happened all 'along and why so many incidents are repeated again and again. I would again request the Government to please consider, if you do not mend your attitude, if you continue with the same timidity and superficiality as you have done so far, then Charar-e-Sharief will be repeated, as Hazratbal has been repeateu Charar-e-Sharief. It will happen elsewhere also. There is another important point which I would like to point out. If you compromise on the basic principles, history does not excuse you. It is not a blind goddess and it will not excuse blindness. In 1988, this very Parliament passed the Misuse of Religious Premises Act, that we will not allow religious premises to be misused. In Jammu and Kashmir in 1988 this Act was not introduced. Why? They said, there is Article 370. What has Article 370

to do with the misuse of religious premises? Right from 1947, Hazarat-bal has been misused for political propaganda. Whenever India was in trouble, whenever anybody was in trouble, he said "Oh, India is un-Isla mic". All that was being done from the mosques. All Jamait-Islamic propaganda is done from some super-mosque. What were they saying? They were saying "Indian democracy is un-Islamie and Indian socialism is un-Islamic". The whole literature of Jamait-e-Islam was repeated every Friday from all the mosques and yet these supposedly nationalist parties who were governing the State at that time said, "No, we don't want to extend this Act". What was the logi? I as a Governor had been pressing, please extend this Act to this State. But nobody looked into this problem. What is surprising is this. *I* say it is a confused nation What is good for the 120 million Muslims in the rest of India is not good for the 40 million Muslims in Kashmir! And it is because of this compromising attitude, it is because of the spirit of Munich, of really surrendering to the wrong-doers, that this problem has arisen. You know the World War. If Hitler had not been appeased, then the World War would not have been fought probably. Today, you are repeating the same thing. Because of the tendency to appease and compromise with the evil, we are creating bloodshed in Kashmir and it is really a great pain that is being inflicted on the people of Kashmir. It is not 'because you are sympathetic out you are not clear of your objectives. You don't know what you are dong Sometimes crimes are committed by Muslims also. Thank you.

**उपसभापति** : तीन, चार, पांच, अभी पांच नाम और हैं, सब लोग जरा संक्षेप में ही बोलिएगा।

**श्री चिमन भाई मेहता ।**

**श्री चिमनभाई मेहता** (गुजरात) : ठीक है. मैडम। बात इतनी है कि सरकार ने जब चुनाव की घोषणा कश्मीर में कर दी तो पहले से ही समझ लेना चाहिए था कि कश्मीर के टेरेरिस्ट चुनाव होने नहीं देना चाहते । ये चुनाव न हों, इसलिए आई०एस०आई० के साथ मिलकर एक षडयंत्र रचा गया कि अगर जो टेरेरिस्ट वहां बैठे हैं- चरार-ए-शरीफ में--उन पर आप एक्शन लेने के लिए आगे कदम उठाएंगे तो पूरी दुनियां में वे कहेंगे कि इंडिया हैज अटैक्ड मस्लिम्स राइटस । तो यह बात है अभी । हिटलर ने जलाया और कम्युनिस्टों ने तख्ता उलट दिया लेकिन यह कम्युनिस्टों ने नहीं जलाया, हिटलर ने जलाया है । यहां मुस्लिम फंडामेंटलिस्ट मुस्लिम बस्तियों को जला रहे हैं । चरार-ए-शरीफ जो मुस्लिम शाइन है, उस को खतरा है और यहां उनको जलाने की कोशिश कर रहे हैं । इंटरनेशनल मुस्लिम ओपिनियन को हमें कहना चाहिए कि ये लोग, जैसे हिंदुस्तान पर कोई हमलावर हमला करता था तो गाय को आगे रख कर हमला करता था और हम सेक्युलर हैं इसलिए हमें हमेशा मानहानि की हिफाजत करनी चाहिए तो करनी चाहिए लेकिन अगर टेरेरिस्ट इस चीज का सहारा लेकर हमारे सामने मुकाबला करने आता है तो कम से कम अब वे ऑफर जो आपने किए, वह वापस ले लीजिए कि वह सलामत तरीके से शाइन में से बाहर निकल कर पाकिस्तान के बॉर्डर पर चले जाएं । अगर इलेक्शन करना है तो करना चाहिए, इसके बारे में विवाद हो सकता है । किसी तरीके से पॉपुलर गवर्नमेंट हो या न हो किन गवर्नमेंट कश्मीर की हो ताकि वे लोग उनसे मुकाबला करें । ठीक है एक स्ट्रेटेजी की हैसियत से आपने पंजाब में फायदा उठाया उसका, ठीक हुआ लेकिन इस सवाल को मैं अभी नहीं खड़ा करना चाहता हूं । किसी भी हालत में नार्मेल्सी नहीं लानी चाहिए । वे व्यक्ति कौन थे? वे मुस्लिम फंडामेंटलिस्ट अपनी शाइन को जलाने के लिए अब तैयार हो गए हैं तो

[श्री चिमन भाई मेहता]

उसका सामना करने के लिए, मुकाबला करने के लिए हमें इंटरनेशनल ओपीनियन को जागृत करना चाहिए कि

These are Muslim fundamentalist's who want to destroy a Muslim shrine This is a very important aspect.

हमारे बीच का जो मतभेद है, उसको हम बाद में भी रख सकते हैं। पूरी दुनियां को हम बता सकते हैं कि पाकिस्तान कहां तक जाता है, आई०एस०आई० कहां तक जाता है ? क्या अपने मुस्लिम श्राइन को जलाने के लिए इलेक्शन रोकने के लिए ये कोशिश कर रहे हैं ? यह एक बात है, आपका ध्यान इसी बात पर मैं आकर्षित करना चाहता हूं ।

**श्री मोहम्मद सलीम** (पश्चिमी बंगाल) : मैडम, थैंक यू। चरार-ए-शरीफ के वाकयात बड़े अफसोसनाक हैं और हम इस बारे में कई बार यहां, इस सदन में चर्चा कर चुके हैं । कल जो हादसा हुई . . .

†[شری محمد سلیم "پشچمی بنگال" : میڈم - تھینک یو - چرار شریف کے واقعات بڑے افسوسناک ہیں اور ہم اس بارے میں کئی بار یہاں اس سدن میں چرچہ کر چکے ہیں - کل جو حادثہ ہوا -]

**उपसभापति** : हुआ। हादसा होती नहीं है, होता है ।

**श्री मोहम्मद सलीम** : और जिस तरह से यह हो रहा है. . . (**व्यवधान**) . . . . . मैडम, मैं जो कहना चाह रहा था, वह यह है कि सरकार ने जब से, वहां कश्मीर में चुनाव कराएंगे, ऐसा बयान दिया है तो उनके अंदर कुछ आत्म-संतोष की बात आई थी, कॉम्लेसेंसी हो रही है । वह ऐसा दिखा रहे हैं कि सब कुछ उनके नियंत्रण में है और वह चुनाव करके पता नहीं किसे खुश करना चाहते हैं लेकिन हम शुरु से यह देख रहे हैं कि वहां की जो सिचुएशन है, उसको आप सिर्फ लॉ एंड आर्डर की तरह देखेंगे तो आप मुसीबत में पड़ जाएंगे । कुछ पोलिटिकल लीडरशिप होनी चाहिए । अभी पिछले दिनों इस सदन में हमारे प्रधान मंत्री ने अपना बयान देते हुए यहां कहा कि हम ग्रेटर इकानॉमी की बात कर रहे हैं, बातचीत करेंगे और उसके बाद आपके पास आएंगे। हम लोगों ने सराहा भी कि चलो कुछ तो ओपनिंग्स होगी, वहां के लोगों को कुछ हम बताएंगे, कुछ हमारी तरफ खींच कर उनको ले आएंगे लेकिन दूसरे दिन ही जैसे उसके साथ-साथ टाडा के बारे में बताया था और होम मिनिस्ट्री ने उसको फिर कंट्रोवर्शियल ईश्यू बनाया। प्रधान मंत्री ने भी सदन में कहा, लोगों को उनके ऊपर बड़ी आस्था होनी चाहिए थी लेकिन वे निराश हुए। तो जब यह ग्रटर इकानॉमी की बात आई तो दूसरे दिन इस तरफ से भी बयान आ गया और उसके बाद लोग फिर भरोसा नहीं कर पा रहे हैं कि जो ये कहते हैं कहां तक वह कर पाएंगे ? लेकिन जब इंपीरियलिस्ट यह कहता है कि चुनाव कराओ, यहां के लोगों को जीतने के बजाय वहां के जो लोग हैं, उनका कॉन्फिडेंस हासिल करने के बजाय वे आस्था जीतना चाह रहे हैं जो उनसे हजारों किलोमीटर दूर बैठा हुआ है, उनकी आस्था जीतना चाह रहे हैं और ऐसा अगर होगा तो ऐसे हादसे होते रहेंगे । आज यह प्रमाणित हो गया है कि जो चरार-ए-शरीफ में मिलिटेंटस बैठे हुए हैं, आप लोग कहते हैं कि अफगान, मुजाहिद्दीन, रिबेल्स, वे लोग हैं । ये व लोग हैं जो धम के नाम पर फंडामेंटलिस्ट. . . (**व्यवधान**) . .

†[شری محمد سلیم : اور جس طرح سے [illegible] ... "مداخلت" ... میڈم - [illegible] کہنا چاہ رہا تھا وہ یہ ہے کہ سرکار نے جب

†[]Transliteratiion in Arabic Script.

سے وہاں کشمیر میں چناؤ کرا سکینگے -
ایسا بیان دیا ہے تو اسکے اندر کچھ آتم
سنتوشٹی کی بات آئی تھی - کمپلیسینسی
ہو رہی ہے - وہ ایسا دکھا رہے ہیں
کہ سب کچھ انکے تینتر میں ہے اور
وہ چناؤ کرکے پتہ نہیں کیسے خوش کرنا
چاہتے ہیں - لیکن ہم شروع سے یہ دیکھ
رہے ہیں کہ وہاں کی جو سچوایشن ہے
اسکو آپ صرف لاء اینڈ آرڈر کی طرح
دیکھیں گے تو آپ مصیبت میں پڑ جائینگے -
کچھ پولیٹیکل لیڈرشپ ہونی چاہئے -
ابھی پچھلے دنوں اس سدن میں ہمارے
پردھان منتری نے اپنا بیان دیتے ہوئے
یہاں کہا کہ ہم "گریٹر الکانومی" کی بات
کر رہے ہیں - بات چیت کرینگے اور اسکے
بعد آپکے پاس آئینگے - ہم لوگوں نے سراہا
بھی کہ چلو - کچھ تو ڈیپینڈینس ہوگی -
وہاں کے لوگوں کو کچھ ہم بتائیں گے کچھ
ہماری طرف کھینچکر انکو لے آئینگے -
لیکن دوسرے دن ہی جیسے اسکے ساتھ
ساتھ "ٹاڈا" کے بارے میں بتایا تھا اور

ہوم منسٹر نے اسکو پرسٹیج اور شیل ایشو
بنایا - پردھان منتری نے جو سدن میں
کہا لوگوں کو اسکے اوپر بڑی آستھا ہونی
چاہیے تھی لیکن وہ نراش ہوئے - تو
جب یہ "گریٹر الکانومی" کی بات آئی تو
دوسرے دن اسلاف سے بھی بیان آگیا
اور اسسے بھی لوگ پھر بھروسہ نہیں کر پا
رہے ہیں کہ جو یہ کہتے ہیں کہاں تک وہ
کر پائینگے - لیکن جب "امپیریلسٹ"
یہ کہتا ہے کہ چناؤ کراؤ - یہاں کے لوگوں
کو جیتنے کے بجائے وہاں کے جو لوگ ہیں
انکا کونفیڈینس حاصل کرنے کے بجائے
وہ آستھا جیتنا چاہ رہے ہیں جو ان
سے ہزاروں کلومیٹر دور بیٹھا ہوا ہے
انکی آستھا جیتنا چاہ رہے ہیں اور
ایسا اگر ہوگا تو ایسے حادثے ہوتے
رہینگے - آج یہ پرمانت ہو گیا ہے کہ
جو چرار شریف میں ملیٹینٹ بیٹھے ہوئے
ہیں - آپ لوگ کہتے ہیں کہ افغان مجاہدین
دیسیلس - وہ لوگ ہیں - یہ وہ لوگ ہیں

†[]Transliteratibn in Arabic Script.

جو دھرم کے نام پر فنڈامینٹلسٹ ... ... "مداخلت" ...]

**श्री नारायण प्रसाद गुप्ता** (मध्य प्रदेश) : यहां धर्म को मत लाओ मेहरबानी करके। . . . (**व्यवधान**) . . .

**श्री मोहम्मद सलीम** : अजीब बात है। क्या मुसीबत है ?

†[شری محمد سلیم : عجیب بات ہے۔ کیا مصیبت ہے۔]

**श्री नारायण प्रसाद गुप्ता** : नहीं, हम सुनने के लिए तैयार नहीं हैं ।. . . . (**व्यवधान**) . . .

**श्री मोहम्मद सलीम** : अरे, आप टोक क्यों रहे हैं ? . . . (**व्यवधान**) . . . . अजीब हालत है ।. . .ये लोग समझते हैं कि खुद अपने धर्म की बात कर सकते हैं। मैं कह रहा हूं कि अफगान, मुजाहिदीन की बात होनी चाहिए । जो लोग अफगानिस्तान में धर्म के नाम पर, वहां जिहाद के नाम पर लड़े और ऐसे बहुत से लोग पूरी दुनियां में हैं, अमरीका से लेकर, पाकिस्तान से लेकर हमारे मुल्क में भी, उनको मदद पहुंचाई । यहां जब अफगानिस्तान में पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी से उसके खिलाफ जब फंडामेंटलिस्ट लोग फौरी तरीके से कुछ कामयाब हुए, यहां इस सदन में अफसोस की बात है कि फंडामेंटलिस्ट मुजाहिदीन, उसके लिए क्लैप किया जाता है यहां पर और इसलिए मैं कह रहा हूं आप किस को दोषी कहते हैं ? यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि कश्मीर में जो कुछ हो रहा है वह सिर्फ अंदरूनी मामला नहीं है, पाकिस्तान के और बाहर के लोग मदद दे रहे हैं चाहे वह पाकिस्तान हो, चाहे अमरीका हो, चाहे अफगानिस्तान ने जो बम दिये, औज़ार दिये या ट्रेनिंग दी हो । हम तो शुरु से कह रहे हैं कि आप चुनाव करवाइये । हम परमानेंट प्रेजीडेंट रूल के पक्ष में नहीं है। लेकिन उससे पहले आपको कुछ इकदामात उठाने पड़ेंगे । सही है न मैडम ? वहां के जो लोग हैं उनकी जो आस्था है, उसे जीतना पड़ेगा ।

†[شری محمد سلیم : ارے آپ ٹوک کیوں رہے ہیں ... "مداخلت" ... عجیب حالت ہے ... یہ لوگ سمجھتے ہیں کہ خود اپنے دھرم کی بات کر سکتے ہیں۔ میں کہہ رہا ہوں کہ افغان مجاہدین کی بات ہونی چاہیئے۔ جو لوگ افغانستان میں دھرم کے نام پر۔ وہاں جہاد کے نام پر لڑے اور ایسے بہت سے لوگ پوری دنیا میں ہیں۔ امریکہ سے لیکر۔ پاکستان سے لیکر ہمارے ملک میں بھی انکو مدد پہنچائی۔ یہاں جب افغانستان میں پیوپلس ڈیموکریٹک پارٹی سے اسکے خلاف جب فنڈامینٹلسٹ لوگ فوری طریقے سے کچھ کامیاب ہوئے یہاں اس سدن میں افسوس کی بات ہے کہ "فنڈامینٹلسٹ" مجاہدین۔ اسکے لئے کلیپ کیا جاتا ہے یہاں پر اور اسلئے میں کہہ رہا ہوں۔]

†[شری محمد سلیم "جاری" : اسلئے میں کہہ رہا ہوں آپ کسکو دوشی کہتے ہیں۔ -

†[]Transliteratibn in Arabic Script.

یہ بات پرمانینٹ ہو چکی ہے کہ کشمیر میں جو کچھ ہو رہا ہے وہ صرف اندرونی معاملہ نہیں ہے پاکستان سے اور باہر سے لوگ مدد دے رہے ہیں چاہے وہ پاکستان ہو چاہے امریکہ ہو۔ چاہے افغانستان نے جو بم دیئے۔ اوزار دیئے یا ٹریننگ دی ہو۔ ہم تو شروع سے کہہ رہے ہیں کہ آپ چناؤ کروا دیئے۔ ہم مستقل پریزیڈنٹ رول کے پکش میں نہیں ہیں۔ لیکن اس سے پہلے آپکو کچھ اقدامات اٹھانے پڑینگے۔ صحیح ہے نہ میڈم۔ وہاں کے جو لوگ ہیں انکی جو آستھا ہے اسے جیتنا پڑے گا۔]

SHRl S. JAIPAL REDDY: Madam, he will not be able to speak freely trom raw onwards!

THE DEPUTY CHAIRMAN: I Beg your pardon.

SHRI S. JAIPAL REDDY: He will not be able to speak freely from now onwards!

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, no. He is speaking very fine. I shuldn't have disturbed him. ... (Interruptions).. He is making good point—he talking about funda-mtntaliiwn — and he has a right to speak. Let him speak.

**श्री मोहम्मद सलीम :** शुरु से हम लोग कह रहे थे कि जो ऐसे हालात हों रहे हैं उन पर अगर हम काबू नहीं पाएंगे तो सिर्फ कश्मीर के अन्दर नही, कश्मीर का मामला अगर हल हो जाता है तो पाकिस्तान की चाहे कोई भी पोलिटिकल पार्टी हो, उसके पास पोलिटिकल इश्यु नहीं रह जाएगा । हमारे मुल्क में भी कई पोलिटिकल पार्टीज का आधा मेनिफेस्टो ही खत्म हो जाएगा कश्मीर का मामला अगर हल हो जाएगा । अमरीका के पास कोई मामला नहीं रह जाएगा इंडिया को कहने के लिए सिर्फ लेबर और चाइल्ड लेबर की बात को छोड़कर । इसलिए वह लोग चाहते हैं कि इसको खींचते रहें । इसलिए साजिश हो रही है । हमारी जरुरत इस बात की है कि हम किस तरह से इस साजिश का मुकाबला करें और वह कश्मीर को लोगों को छोड़ कर के नहीं । इसलिए हम शुरु से यह बात कह रहे हैं । आपने ग्रेटर ऑटोनोमी की बात की है, आप पेकेज डिक्लेयर करो कुछ तो कहो कि आप क्या करने जा रहे हैं । वहां के लोगों ने जो इनिशियेटिव लिये हैं, वहां के लोगों को हम कुछ कहना चाहते हैं, मिलिटेंटस जो कुछ कह रहे हैं, वह सही नहीं है, हम जो कुछ कह रहे है उससे आगे बढ़ कर कुछ कह रहे हैं, इसलिए अगर हमारे पास कुछ पेकेज नहीं होगा तो हम नहीं कह सकते । उसके बाद अगर वहां के लोगों की कुछ आस्था जीतेंगे तो वाकई हम जो चुनाव कराना चाहते हैं करेंगे लेकिन दिक्कत यह है कि अभी जो वाकया चरार-ए-शरीफ में हुआ है, जो कानफिडेंस लोगों का शेक कर दिया गया है चाहे वह मुल्क के दूसरे हिस्से में हों या जम्मू कश्मीर के अन्दर हो । इसलिए हमें बड़ी ऐतिहात से, बड़ी समझदारी से कदम लेना चाहिये और जो भी कदम है वह कांपते कांपते नहीं, सही मायने में, सही ढंग से लेना पड़ेगा । अगर घड़ी के पेंडुलम की तरह आप एक बार दाएं जाएंगे और एक बार बाएं जाएंगे तो कोई निर्णय नहीं हो सकता है। लाल किले पर जो प्रधानमंत्री ने कहा, जनेश्वर मिश्र जी उसके बारे में कह रहे थे कि हमारा एक ही एजेंडा है कि हमें पाक-आकुपाइड कश्मीर को लेना है । पूरे पेंडुलम की तरह आप दाईं तरफ

†[] Transliteration in Arabic script.

[श्री मोहम्मद सलीम]

चले जाएं और फिर दूसरी बार बाईं तरफ चले जाएं, ऐसा नहीं होना चाहिये। आपकी अपनी पालिसी में क्लीयर-कट बैलेंस होना चाहिये कि आप क्या करने जा रहे हैं, कहां तक करने जा रहे हैं। उसके बारे में पोलिटिकल समझ होनी चाहिये। उसके लिए सदन को कानफिडेंस में लेना चाहिये, मुल्क के लोगों को कानफिडेंस में लेना चाहिये। जब हम मुल्क के लोगों की बात कर रहे हैं तो कश्मीर के लोगों को छोड़ कर नहीं, कश्मीर उसके साथ जुड़ा हुआ है।

†[شری محمد سلیم (جاری): شروع سے ہم لوگ کہہ رہے تھے کہ ایسے جو حالات ہو رہے ہیں ان پر اگر ہم قابو نہیں پا سکینگے۔ تو صرف کشمیر کے اندر نہیں۔ کشمیر کا معاملہ اگر حل ہو جاتا ہے تو پاکستان کی جا رہے کوئی بھی پولیٹیکل پارٹی ہو اسکے پاس پولیٹیکل ایشو نہیں رہ جائیگا۔ ہمارے ملک میں بھی کئی پولیٹیکل پارٹیز کا آدھا مینی فیسٹو ہی ختم ہو جائیگا۔ کشمیر کا معاملہ اگر حل ہو جائیگا۔ امریکہ کے پاس کوئی معاملہ نہیں رہ جائیگا انڈیا کو پکڑنے کے لئے صرف لیبر اور چائلڈ لیبر کی بات کو چھوڑ کر۔ اسلئے وہ لوگ چاہتے ہیں کہ اسکو کھینچتے رہیں۔ اسلئے سازش ہو رہی ہے۔ ہماری ضرورت اس بات کی ہے کہ ہم کس طرح سے اس سازش کا مقابلہ کریں اور وہ کشمیر کو لوگوں کو جیتو کر نہیں۔ اسلئے ہم شروع سے یہ بات کہہ رہے ہیں۔ "آپنے گریٹر آٹونومی" کی بات کی ہے۔ آپ پیکیج کلیر کرو۔ کچھ تو کہو کہ آپ کیا کرنے جا رہے ہیں۔ وہاں کے لوگوں نے جو انیشیٹیو لئے ہیں۔ وہاں کے لوگوں کو ہم کچھ کہنا چاہتے ہیں۔ ملیٹینٹس جو کچھ کہہ رہے ہیں وہ صحیح نہیں ہے ہم جو کچھ کہہ رہے ہیں اس سے آگے بڑھ کر کچھ کہہ رہے ہیں۔ اسلئے اگر ہمارے پاس کچھ پیکیج نہیں ہوگا تو ہم نہیں کہہ سکتے۔ اسکے بعد اگر وہاں کے لوگوں کی کچھ آستھا جیتیں گے تو واقعی ہم جو چناؤ کرانے چاہتے ہیں کرینگے لیکن دقت یہ ہے کہ ابھی جو واقعہ "چرار شریف" میں ہوا ہے۔ جو کانفیڈنس لوگوں کا ٹھیک کر دیا گیا ہے۔ چاہے وہ ملک کے دوسرے حصے میں ہو یا جموں کشمیر کے اندر ہو۔ اسلئے ہمیں بڑی احتیاط سے۔ بڑی سمجھداری سے قدم لینا چاہیے اور جو بھی قدم ہے وہ کانپتے کانپتے نہیں۔ صحیح معنی میں۔ صحیح ڈھنگ سے لینا پڑے گا۔ اگر گھڑی کے پینڈولم کی طرح آپ ایک بار دائیں جائیں گے اور ایک بار بائیں جائینگے تو کوئی فیصلہ

†[]TransliteratiOn in Arabic Script.

نہیں ہو سکتا ہے - لال قلعہ پر جو
پردھان منتری نے کہا تھا - جنیشور
مشرا جی اسکے بارے میں کہہ رہے تھے
کہ ہمارا ایک ہی ایجنڈا ہے کہ ہمیں
پاک آکوپائیڈ کشمیر کو لینا ہے -
پورے پینڈولم کیطرح آپ دائیں
طرف چلے جائیں - اور پھر بائیں طرف چلے
جائیں - ایسا نہیں ہونا چاہیئے - آپکی
اپنی پالیسی میں کلیئر کٹ بیلینس ہونا
چاہیئے کہ آپ کیا کرنے جا رہے ہیں - کہاں
تک کرنے جا رہے ہیں - اسکے بارے میں
پولیٹیکل سمجھ ہونی چاہیئے اسکے لیئے
سبھوں کو کانفیڈینس میں لینا چاہیئے -
ملک کے لوگوں کو کانفیڈینس میں
لینا چاہیئے - جب ہم ملک کے لوگوں کی
بات کر رہے ہیں تو کشمیر کے لوگوں کو
چھوڑ کر نہیں کشمیر اسکے ساتھ جڑا ہوا
ہے -]

**श्री दिग्विजय सिंह** (बिहार) : उप-सभापति महोदया, इंसान जब असहाय हुआ तो उसने समाज की स्थापना की और जब समाज भी अपने को असहाय महसूस करने लगा तो उसने राज्य की स्थापना की । राज्य को ताकत समाज ने और इसान ने दी कि तुम हमारी हिफाजत करो, हमारी धरती की हिफाजत करो, इसके बदले में चाहो तो हम लोगों पर गोली भी चलाओ । यह इंसान ने राज्य को ताकत दी । लेकिन जिस राज्य में पिछले दो महीनों से लोगों को यह अंदाजा लगे कि विदेशी लोग आकर वहां जमे हुए हैं, सरकार को इसकी सूचना है कि पुलिस महकमे के एक बड़े पदाधिकारी के घर पर आतंकवादियों का सरगना रह रहा है और इस पर भी वहां की सरकार खामोश बैठी हो तो इस राज्य पर लोगों की कितनी आस्था हो सकती है, इसका अंदाजा हम लगा सकते हैं । जब प्रधान मंत्री जी ने कहा कि कश्मीर में चुनाव होने की उम्मीद है तो इस देश के लोगों में एक विश्वास जगा । हर आदमी जो प्रधानमंत्री जी से मिला, कश्मीर के सवाल पर उसने एक ही बात जाननी चाही थी कि आप चुनाव तो करा रहे हैं लेकिन आपके पास सतर्कता कहां है आप कितने विश्वास से वहां चुनाव करा सकते हैं । लेकिन शायद इसका जवाब न तो प्रधानमंत्री जी के पास था और आज जो घटना हो रही है, चरार-ए-शरीफ की घटना, वह इस बात को साबित कर रही है कि सरकार को चुनाव कराने के पूर्व वहां जो तैयारियां करानी चाहीं थीं, उसे वह नहीं कर पाई । उपसभापति महोदया, मैं ज्यादातर मामलों में सरकार के खिलाफ रहा हूं, उनकी नीतियों के खिलाफ रहा हूं । लेकिन कश्मीर की बात से मुझे ऐसा लगता था, मैं ईमानदारी से कह रहा हूं, पार्टी से हटकर कह रहा हूं, कश्मीर के मसले पर मुझे लगता था कि इस मामले में सरकार कुछ पहल कर रही है । जो जानकारी हमें मिलती थी उससे लगता था कि कुछ पहल हो रही है । लेकिन आज यह विश्वास मेरा टूट गया है । यह विश्वास इसलिए टूटा है कि सरकार जब चुनाव की बात कर रही थी तो सारे देश के लोगों ने सरकार से यही सवाल पूछा था कि चुनाव की तैयारी क्या है, लेकिन आपके पास इसका कोई जवाब नहीं था । चरार-ए-शरीफ की इस घटना ने साबित कर दिया है कि सरकार अपने दायित्व का निर्वाह कश्मीर में नहीं

†Transliteratjon in Arabic Script]

[श्री दिग्विजय सिंह]

कर रही है जिसका उसने इस देश की जनता को विश्वास दिलाया था । मैं आज फिर कहता हूं कि सरकार के पास जो रास्ते हैं उनमें चुनाव का रास्ता एक प्रमुख रास्ता है । लेकिन यह बड़ा जोखिम का कदम होगा । सरकार को तैयारी करनी चाहिए जिस कीमत पर भी हो । दुनिया का विश्वास कश्मीर के सवाल पर तभी जीता जा सकता है जब कश्मीर में चुनाव हों और यह काम सरकार को करना है । इसकी तैयारी कराने का काम उसका है । मैं पूछना चाहता हूं कि ये विदेशी कौन हैं और इनका नाम लेने में सरकार क्यों हिचक रही है ? दुनिया में सब लोग जानते हैं कि वहां पर अफगानिस्तान के लोग हैं । बहुत से लोगों का कहना है कि पाकिस्तान के लोग हैं । यह कौन विदेशी हैं ? इनका नाम सरकार क्यों नहीं बता रही है ? क्या सरकार के पास इसकी जानकारी है कि ये विदेशी लोग कौन हैं ? इस देश के लोग जानना चाहते हैं कि ये मुजाहिदीन कौन हैं ? इनका नाम सरकार अखबारों में क्यों नहीं छापती, देश के लोगों को क्यों नहीं बताती ? मैं चाहता हूं कि इन विदेशियों का नाम सरकार बताये ।... **(व्यवधान)** उसका तो मालूम है लेकिन और कौन लोग हैं जिनका नाम लिया जा रहा है ।

जनेश्वर मिश्र जी ने बिल्कुल सही बात कही कि जहां विनम्र भाषा बोलनी चाहिए सरकार वहां लठैतों की भाषा बोलती है कि हम सबक सिखा देंगे, हम कब्जा कर लेंगे, हम वापस ले जायेंगे और जहां कदम कठोर उठाने की आवश्यकता है वहां पर ऐसे कदम उठाए जाते हैं जिससे ऐसा लगे कि सरकार नाम की कोई चीज कश्मीर में है ही नहीं, यह सवाल खड़ा होता है ।

उपसभापति महोदया, मैं आखिरी बात सरकार से अपील के तौर पर कहना चाहता हूं । दो तिहाई लोग उस इलाके को छोड़कर चले आए । आतंकवादियों के दबाव के बावजूद उन्होंने आतंकवादियों के सामने घुटने नहीं टेके । उनका विश्वास इस राष्ट्र के साथ जुड़ा हुआ है । अगर उनका विश्वास जीतना है तो जितने कठोर से कठोर कदम हों, वह कदम आतंकवाद के खिलाफ उठाए जाएं और जो इन्नोसेंट लोग हैं, जो भारत के साथ अपना रिश्ता जोड़ने के लिए आज भी तैयार हैं उनकी सुरक्षा का इंतजाम पूरी तरह से सरकार करे । हम, ब्लैक कमांडो, ब्लैक कैट, एस०पी०जी० और सरकार के लोग जिप्सियों में घूमें और वहां की निरीह जनता, कश्मीर की निरीह जनता, जिसका विश्वास आज भी नयी दिल्ली के साथ जुड़ा हुआ है उनको उन आतंकवादी खूंखार लोगों के हाथ छोड़ दिया जाए..... जिनका जितना कत्लेआम कर सको करो, भारत सरकार सो रही है । माननीय प्रधानमंत्री जी के मंत्री यहां बैठे हुए हैं। यह मंत्रालय तो अब गृह मंत्रालय में रहा नहीं । अब तो सीधे प्रधान मंत्री के हाथ में है । प्रधान मंत्री ने कहा था कि कश्मीर का मामला हम देखेंगे । आप यहां बैठे हैं तो इन सारे सवालों का जवाब देंगे । अच्छा तो होता कि प्रधान मंत्री खुद आते । लेकिन आप उनके नुमाइंदे के रूप में यहां हैं इसलिए आप इन सवालों का जवाब देंगे । धन्यवाद ।

**विपक्ष के नेता (श्री सिकन्दर बख्त)** : शुक्रिया मैडम, मैं इस मौजू पर कई बार इस सदन में बोल चुका हूं । पूरी तफसील के साथ इस सवाल पर आज बोलने का इरादा नहीं है । भुवनेश जी, मेरी तरफ तवज्जह कीजिए, पटेल साहब से बाद में बातें कीजिएगा । सिर इधर करके मेरी बात सुनें । सामने मेरी नजर से नजर मिलाइए ।

सदर साहिबा, खास तौर से दो बातें सिब्ते रजी की तकरीर से पैदा हुई हैं, मैं उनकी तरफ तवज्जह दिलाना चाहता हूं । किसी भी इबादतगाह या दरगाह के तकद्दुस के मायने क्या हैं ? यानी हमने अपने आपको, अपने मुल्क को इस कदर मुसिबत के कटघरे में खुद लाकर खड़ा

कर दिया है ? हजरत बल में आतंकवादी घुस गए, हम दूर बैठे रहे । हम वहां चले जाएंगे तो दरगाह या इबादतगाह के तकद्दुस में फर्क आ जाएगा । जो आतंकवादी उसमें घुसकर बैठे हैं, उनके घुसकर बैठने से पता नहीं क्यों उस दरगाह के तकद्दुस में कोई फर्क नहीं आएगा । पागलपन है । जब इस किस्म के लोग.. **(व्यवधान)** छोड़िए उसकी बातें । मैं बात हिन्दुस्तान की कर रहा हूं । आगे भी चलकर बताऊंगा । हम लोगों ने यह समझना छोड़ दिया है कि जब आतंकवादी घुसकर कहीं बैठ जाता है तो वह उस दरगाह या इबादतगाह के तकद्दुस को बरबाद या पामाल नहीं कर रहा है ? हम अगर हिन्दुस्तान की इबादतगाहों की, दरगाहों की हिफाजत करने के दावेदार हैं तो जिस वक्त कोई आतंकवादी किसी दरगाह या इबादतगाह में घुसे, हमारी फौजें उसमें घुस जानी चाहिए और उनको निकालकर बाहर फेंक देना चाहिए । हम एक दायरा बनाकर दूर बैठे रहते हैं । आतंकवादियों को इजाजत दें कि हमारी दरगाहों के, इबादतगाहों के तकद्दुस को पामाल करें, तबाह करें और हम अपने आपको दुनिया के की कम्युनिटी के सामने मुजरिम और मुल्जिम की हैसियत से पेश करें ? माफ करेंगे, आज सिब्तेरज़ी साहब ने कहा कि हमने बड़ा तीर मारा है । हमने 30-32 दिन में बगैर दरगाह में कदम रखे हुए उसे खाली करा लिया है । यह बुनियादी गलती है । हमने खुद अपने आपको दुनिया की नजरों में मुल्जिम बना रखा है और एक बिल्कुल गलत तरीका अख्तियार कर रखा है । ये लोग तकद्दुस के मायने नहीं जानते हैं । आप लोग हमारी दरगाहों की, इबादतगाहों की हिफाजत का मतलब ही नहीं समझते हैं । और अब वे चरारे शरीफ में आ गए हैं । गालिबन 60 दिन से ज्यादा हो गए हैं । चरारे शरीफ में जो घुसे बैठे हैं वे तबाह कर रहे हैं उसके तकद्दुस को और आप यहां बैठे हुए तमाशा देख रहे हैं । उसके अलावा लम्बी-लम्बी बातें करते हैं कि भारत सरकार ने कमाल कर दिया । हम हाथ, बांधे हुए बैठे रहे जबकि वे उसमें घुसे बैठे रहे ।

"इतनी न बढ़ा पाकिए दामा कि हिकायत, को जरा देख, जरा बंद दामन कबा देख"

क्या से क्या कर देते हैं आप । दूसरा आपने कहा कि आपने बड़ा सर्टिफिकेट हासिल कर लिया दुनिया से कि हमने बड़ा तीर मारा हजरत बल में । किससे सर्टिफिकेट लेने गए थे आप । अमेरिका से सर्टिफिकेट लेने गए थे । हम बड़े जबर्दस्त है । आतंकवादी जब चाहें हमारी दरगाहों में घुस जाते हैं और हम हाथ बांधे बैठे रहते हैं । हम इतने नर्म लोग हैं । खुदा जाने अब इसके लिए नर्म लफ्ज है या दूसरा कोई मुनासिब लफ्ज है । हो सकता है वह अनपार्लियामेंटरी लफ्ज हो अगर मैं वह आपसे कहूं । आपकी हालत देखिए अभी मेरे पीछे से आवाज आई थी कि काबे में एक ईरानी घुस गया । फौजें घुस गयी काबे के अंदर सऊदी अरेबिया की । किसी ने इंटरनेशनलाइज नहीं किया उस सवाल को । आज पाकिस्तान में शिया मुस्लिमों की सैकड़ों मस्जिदें गिरा दी गयी हैं, वह सवाल इंटरनेशनलाइज नहीं हुआ । शौकीन आप हैं । अपनी बात को इंटरनेशनलाइज करने में शौकीन हमारी सरकार हो चुकी है । आप क्यों कहने जाते हैं । आप लोगों का क्यों दुनिया के सामने दम निकल रहा है । आप लोग सिर झुका रहे हैं अमेरिका के सामने और दुनिया को हर डिक्टेशन जो वह दे रहा है वह आप तसलीम कर रहे हैं । दुनिया के मुल्कों को समझा नहीं पाते हैं । जिन मुल्कों को कुछ करना होता है वे अपने ही मजहब की इबादतगाहों को तहस नहस कर देते हैं और सवाल इंटरनेशनलाइज नहीं बनता है । आप अपने मुल्क की इबादतगाहों की हिफाजत नहीं कर सकते हैं । सवाल इंटरनेशनलाइज बन जाता है क्योंकि आप करना चाहते हैं । क्योंकि आप बनाते हैं । बदकिस्मती यह है कि आप अपने मुल्क को ले जाकर दुनिया की कम्युनिटी के सामने कटघरे में खड़ा कर देते हैं

आप क्षमा करेंगी, मैं सख्त अल्फाज इस्तेमाल कर रहा हूं, भुवनेश साहब, कि शक मार रही है हमारी सरकार चरार-ए-शरीफ पर बैठ कर, इतने दिन से लोग घुसे बैठे हैं और हम कुछ कर नहीं सकते और दुनिया भर से सर्टिफिकेट मांगने की फिक्र कर रहे हैं कि हम बड़े अच्छे हैं कि हमारी दरगाहों में आतंकवादी जाकर घुस सकते हैं । आतंकवादी भी कहां-कहां के आने लगे हैं, शेखी बघारते हैं आप कि हालात बेहतर हो रहे हैं । क्या बेहतर हो रहे हैं । आप हजरतबल से वहां पहुंच गए चरार-ए-शरीफ में पहुंच गए, वादी से निकल कर आप डोडा में पहुंच गए, किश्तवार पहुंच गए, भदरवा में पहुंच गए और अब जम्मू में आ गए हैं और जम्मू में आपका 26 जनवरी का वाक्या है । आप कहते हैं कि हालात बेहतर हो रहे हैं । सिवाय इसके आपके पास कुछ और भी है । मैं ज्यादा फैलाव में नहीं जाना चाहता हूं, दो बातें दोहराना चाहता हूं । इबादतगाह का तकदुस तो तबाह वह करता है जो उसमें जाकर घुस कर बैठता है । हमें बिल्कुल सफाई के साथ उनको इबादतगाहों से निकाल कर फेंक देना चाहिए, हाथ बांधे बाहर नहीं खड़े रहना चाहिए । दूसरा मैं कहना चाहता हूं कि आप इस मुल्क को दुनिया की कम्युनिटीज के सामने शर्मिन्दा करने का तरीका वजादारी को आप छोड़ दीजिए । आप हैं जो इस मुल्क को दुनिया के मुल्कों के सामने ले जाकर और इंटरनेशनल पता नहीं क्या खौफतारी है आप पर इंटरनेशनलाइज करने का, जो अपनी बात है पहले अपने मुल्क को तो संभालो, उसके बाद उसकी फिक्र करना । हर वक्त भीख का प्याला लिए हुए हैं, अमरीका के सामने न झुका करो ।

सदर साहिबा, मैं इस मसले पर बहुत कुछ कह सकता हूं । दिल पक्का पड़ा है, क्योंकि सरकार पत्थर है । यह अपने मुल्क को जिस तरीके से तबाह कर रही है इंटरनेशनल कम्युनिटी की नजर में और खुद अपने मुल्क की नजर में भी, कुछ नहीं कह सकता हूं । क्षमा करें मुझे, आप प्रधान मंत्री साहब को जाकर बताएं ।

†[Transliteration in Arabic Script.

کسی درگاہ یا عبادت گاہ میں گھسے۔ ہماری جو جیلیں ہیں انہیں گھسو جانی چاہیئے اور ان کو نکال کر باہر پھینک دینا چاہیئے۔ ہم ایسا دائرہ بنا کر دور سے رہتے ہیں۔ آتنک وادی کو اجازت دیں کہ ہماری درگاہوں سے عبادت گاہوں کے تقدس کو پامال کریں۔ تباہ کریں اور ہم اپنے آپ کو دنیا کی کمیونٹی کے سامنے مجرم اور ملزم کی حیثیت سے پیش کریں۔ معاف کریئے۔ آج سبط رضی صاحب نے کہا کہ ہم نے بڑا تیر مارا ہے۔ ہم نے تیس بتیس دن میں بغیر درگاہ میں قدم رکھتے ہوئے اسے خالی کرا لیا ہے۔ یہ بنیادی غلطی ہے۔ ہم نے خود اپنے آپ کو دنیا کی نظر میں ملزم بنا رکھا ہے اور ایک بالکل غلط طریقہ اختیار کر رکھا ہے۔ یہ لوگ تقدس کے معنی نہیں جانتے ہیں۔ ایسے لوگ ہماری درگاہوں کی۔ عبادت گاہوں کی حفاظت کا مطلب ہی نہیں سمجھتے ہیں۔ اور اب وہ چرار شریف میں آ گئے ہیں۔ غالباً ۶۰ دن سے زیادہ ہو گئے ہیں۔ چرار شریف میں جو گھسے بیٹھے ہیں وہ تباہ کر رہے ہیں اس کے تقدس کو اور آپ یہاں بیٹھے ہوئے تماشہ دیکھ رہے ہیں۔ اس کے علاوہ کبھی کبھی باتیں کہتے ہیں کہ بھارت سرکار نے کمال کر دیا ہم ہاتھ باندھے ہوئے بیٹھے رہے جبکہ وہ اس میں گھسے بیٹھے رہے۔

ناصح نہ بڑھا پائی دامان کی حکایت
دامن کو ذرا دیکھ ذرا بند قبا دیکھ

کمال ہے کیا کر دیتے ہیں آپ۔ دوسرا آپ نے کیا کہ آپ نے بڑا سرٹیفکیٹ حاصل کر لیا دنیا سے کہ ہم نے بڑا تیر مارا حضرت بل میں۔ کس سے سرٹیفکیٹ لینے گئے تھے آپ۔ امریکہ سے سرٹیفکیٹ لینے گئے تھے۔ ہم بڑے زبردست ہیں۔ آتنک وادی جب چاہیں ہماری درگاہوں میں گھس جاتے ہیں۔ اور ہم ہاتھ باندھے بیٹھے رہتے ہیں۔ ہم اتنے نرم لوگ ہیں۔ خدا جانے اب اس کے لئے نرم لفظ ہے یا دوسرا کوئی مناسب لفظ ہے۔ ہو سکتا ہے وہ ان پارلیمنٹری لفظ ہو۔ آخر میں وہ اب سے کہوں۔ آپ کی حالت دیکھئے۔ ابھی پیچھے سے آواز آئی تھی کہ کعبے میں ایک ایرانی گھس گیا۔ فوجیں گھس گئیں کعبہ کے اندر سعودی عربیہ کی۔ کسی نے انٹرنیشنلائز نہیں کیا اس سوال کو۔ آج پاکستان میں شیعہ مسلمانوں کی سینکڑوں مسجدیں گرا دی گئی ہیں۔ وہ سوال انٹرنیشنلائز نہیں ہوا۔ شوقین آپ ہیں۔ اپنی بات کو انٹرنیشنلائز کرنے میں شوقین ہماری سرکار ہو چکی ہے۔

آپ کیوں جھکتے جا رہے ہیں۔ آپ لوگوں کا دنیا کے سامنے دم نکل رہا ہے۔ آپ لوگ سر جھکا رہے ہیں امریکہ کے سامنے اور دنیا کو پرڈکٹیشن وہ دے رہا ہے۔ وہ آپ تسلیم کر رہے ہیں۔ دنیا کے ملکوں کو سمجھ نہیں پاتے ہیں۔ جن ملکوں کو کچھ کرنا ہوتا ہے وہ اپنے ہی مذہب کی عبادت گاہوں کو تہس نہس کر دیتے ہیں اور سوال انٹرنیشنلائز نہیں بنتا ہے۔ آپ نے اپنے ملک کی عبادت گاہوں کی حفاظت نہیں کر سکتے ہیں۔ سوال انٹرنیشنلائز بن جاتا ہے کیونکہ آپ کرنا چاہتے ہیں۔ کیونکہ آپ بناتے ہیں۔

بد قسمتی یہ ہے کہ آپ اپنے ملک
کو لے جا کر دنیا کی کمیونٹی کے سامنے
کٹہرے میں کھڑا کر دیتے ہیں۔ آپ
چھپا کر رکھیں گی۔ میں سخت الفاظ استعمال
کر رہا ہوں جو ورنیش صاحب۔ کہ جھک
مار رہی ہے ہماری سرکار۔ چرار شریف
پر بیٹھ کر اتنے دن سے لوگ گھسے بیٹھے
ہیں اور ہم کچھ کر نہیں سکتے اور دنیا بھر
سے سرٹیفکیٹ مانگتے بھی فکر کر رہے
ہیں۔ کہ ہم بڑے اچھے ہیں کہ ہماری
درگاہوں میں آتنکوادی جا کر گھس
سکتے ہیں۔ آتنکوادی بھی کہاں کہاں
سے آنے لگے ہیں۔ شیخی بگھارتے ہیں۔
آپ حالات بہتر ہو رہے ہیں۔ کیا بہتر
ہو رہے ہیں۔ آپ حضرت بل سے وہاں
پہنچ گئے۔ چرار شریف میں پہنچ گئے۔
وادی سے نکل آپ ڈوڈہ میں پہنچ
گئے۔ کٹھوا میں پہنچ گئے۔ بھدروا میں
پہنچ گئے۔ اور اب جموں میں آ گئے
ہیں اور جموں میں آپ کا ۲۶ جنوری
کا واقعہ ہے۔ آپ کہتے ہیں کہ حالات
بہتر ہو رہے ہیں۔ سوال سب کے آپ کے پاس
کچھ اور بھی ہے۔ میں زیادہ پھیلاؤ
میں جانا نہیں چاہتا ہوں دو باتیں
دوہرانا چاہتا ہوں۔ عبادتگاہ کا تقدس
تو تباہ وہ کرتا ہے جو اسمیں جا کر گھس
کر بیٹھتا ہے۔ ہمیں بالکل صفائی
کے ساتھ انکو عبادتگاہ سے نکال کر
پھینک دینا چاہیئے۔ ہاتھ باندھ کے
باہر نہیں کھڑے رہنا چاہیئے۔ دوسرا
میں کہنا چاہتا ہوں۔ کہ آپ اس
ملک کو دنیا کی کمیونٹی کے سامنے شرمندہ
کرنے کا طریقہ۔ جو ضد اور ہی کو آپ
چھوڑ دیجئے۔ آپ ہمیں جو اس ملک
کو دنیا کے ملکوں کے سامنے جا کر۔

اور انٹرنیشنل پتہ نہیں کیا خوف طاری
ہے آپ انٹرنیشنلائز کرنے کا۔ جو اپنی

بات ہے۔ پہلے اپنے ملک کو تو سنبھالو۔
اسکے جو اسکی فکر کرنا۔ ہر وقت بھیک

کا پیالہ لئے ہوئے ہیں۔ امریکہ کے
سامنے نہ جھکا کرو۔

صدر صاحبہ۔ میں اس مسئلے
پر بہت کچھ کہہ سکتا ہوں۔ دل پھٹا پڑا
ہے۔ کیونکہ سر کا بقو ہے۔ یہ اپنے
ملک کو جس طریقے سے تباہ کر رہی
ہے۔ انٹرنیشنل کمیونٹی کی نظر میں
اور خود اپنے ملک کی نظر میں بھی۔

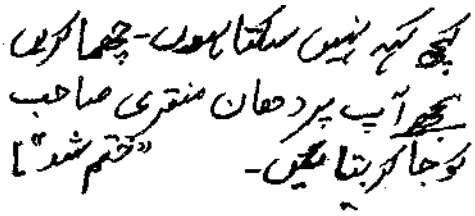

SHRI MAKHAN LAL FOTEDAR (Uttar Pradesh): Madam Deputy Chairman, I nefrained (from saying anything on this subject, but I am now promoted to say a few words by one of the speeches made on the floor of this House that Charar-e-Sharief is a Muslim shrine. I will say only a few words, very briefly. For us the people of Kashmir, the Shrine of Charar-e-Sharief is of Seikh Noorud-din. It represents the ethos of Kashmir. It is not a Muslim Shrine. It belongs to all the Kashmiris. AU the Kashmiris irrespective of their religion have full faith in the Shrine. I feel sad because the Government is taking recourse to such tilings in Kashmir which are very sensitive and which are very critical. It is well-know that some terrorists are inside the Shrine. I would not like to call them militants because "militants" in Urdu means those who are fighting for their rights and stake, that is, Mujahideen. I would like to call them terrorists. It is very unfortunate that the Government here and in Kashmir also called them as terrorists, as militants who are fighting for their motherland. But it is well known everywhere that for the last 7 or 3 months' these terrorists from abroad, from other countries and from our neighbouring country have occupied the holy Shrine of Sheikh Nooruddin. I do not know where the Government was then when they were allowed to enter the Shrine especially at a time when the Government was taking some measures so far as the Hazratbal Shrine was concerned. In the Hazaratbal Shrine case also, the Goverment has acted, *it* I may say SO, very clumsily and the people of Kashmir believed that the Government of India has lost its substance and its sustenance.

because, as for the people who were arrested, it is not known whether they are on the soil of Kashmir; it is not known where they are now it is not known whom they were handed over to. At that time, the Government committed one of the greatest blunders in Kashmir. And this time, I have the faith that the Shrine will be safe. It is not be cause of the Government. I would rather say, inspite of the Government, the Shrine itself will be safe because the people of Kashmir have faith in that. What is making us sad is that the Government's writ does not run in Kashmir as also, *to* a very large extent, it does not run In other parts of India. (Interruptions) .

I was feeling happy that the Prime Minister had taken over the portfolio of Kashmir from our worthy, able and articulate Home Minister and a young Minister of State. We thought that there was no policy on Kashmir and perhaps, a policy would be formulated. As of now, I feel that they have absolutely no policy on Kashmir. But I would like the Prime Minister, as the leader of the country, to address the

†[ [Transliteration in Arabic Script,

nation. This can provide even an opportunity to talk to the people on what is happening in Kashmir. He may have said that it is he who decides. Here also, he must demonstrate that it is he who decides. These are the occasions which prove that there is a Government in India. You must take the entire nation into confidence as to what the Govemment is doing in Kashmir and how it is going, to meet this challenge either from the Shrine or from the people.

The second thing that I would like to say is that there should be no compromise en principles. We have made many compromises in the past. We have allowed the Babri Masjid to get demolished. But we should not allow the majestry of the Indian State to get demolished. Here, in Kashmir, it is the majesty of the Indian State which is at stake. I would very humbly request the Prime Minister that he should protect the majesty of the Indian State and restore the confidence of the People in the ability of the Government to govern. My impression is that the Government is meant for governance. This Government will have to prove that it is has the will, the political will, to govern this country. Then, and only then, you can keep Kashmir as an integral and inalienable part of India.

Thirdly, what has pained me most is that a large number of houses have been burnt around the mosque. Some say the number is IMO, some say it is 500, and some others say it is 5000. My information is that almost the entire population from the Charare-Sharief has left the place. Here is a time when the Government should win the hearts of those People by rebuilding the houses. It is very sad that the Government of lndia is sanctioning only Rs. 5,000-per house. With Rs. 5000!- you cannot build even a urinal in Kashmir. The Government should show some gesture that the houses which have been burnt will be reconstructed at Government's cost. The matter is disputed as to who has burnt the houses. But that is a different matter. Let us hold a judicial inquiry and come to a conclusion. But at the present moment, we should show some gesture towards the people of Kashmir.

Last but not the least, I would like to say that the Government is thinking of adopting some adventurous course in Kashmir. I would not like to define what this adventurous course is. But I would like to cau-iion them in advance: Don't be an adventurist and don't show this brinkmanship. Address the issues and find out the solutions. Only then and then alone will you be able to win the hearts of the people. Kashmir can remain a part of India provided you deal with the minds of the people in Kashmir. For that, a political process of having a Government is not necessary. The political direction is necessary, which will deal with the minds of the people in Kashmir as in any other part of india. With these words, I think the Prime Minister will rise to the occasion at this moment and take this opportunity which Kashmir has provided to him. I do hope that he will do and that there will lie some solution, if not permanent, to the Kashmir problem Thank you, Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No body is answering on that. Shri V. Narayanasamy. Non-utilisation of Rs. 394 allotted for DESU. ...*'{In*-fcmiptions)... >

SHRI DIGVIJAY SINGH: No reply from the Minister! Madam, we

[Shri Digvijay Singh]

have requested the Minister to stay here, but he is not responding.

**श्रीमती सुषमा स्वराज (हरियाणा)**: मैडम, क्या यह बहस निरुत्तर रह जाएगी .....(**व्यवधान**)....

**श्री दिग्विजय सिंह** : मैडम, यह जो इतनी बात कही गई, सारा सदन इस बात पर एक था, इसका उत्तर आना चाहिए। मंत्री जी बैठे हुए हैं और आपको हमने इसलिए रोका था कि आप इस पर कुछ बोलेंगे। कुछ तो आप बोलिए इस पर।...(**व्यवधान**)...

**श्री सिकन्दर बख्त** : मेरी बिल्कुल मुख्तलिफ राय है। भुवनेश चतुर्वेदी साहब न बोलें, प्राइम मिनिस्टर साहब तशरीफ लाएं और वे इस सब्जेक्ट पर बोलें। ....(**व्यवधान**)...

†[شری سکندر بخت : میری بالکل مختلف رائے ہے - بھوونیش چترویدی صاحب نہ بولیں - پرائم منسٹر صاحب تشریف لائیں اور وہ اس سبجیکٹ پر بولیں - ... "مداخلت" ...]

**श्रीमती सुषमा स्वराज** : गृहमंत्री जी बैठे हुए हैं, वह बोलें।...(**व्यवधान**)

**प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा** : चव्हाण साहब, आप कुछ बोलिए। ...(**व्यवधान**)

**श्री सिकन्दर बख्त** : नहीं, नहीं। चव्हाण साहब के पास से वह महकमा चला गया है।...(**व्यवधान**)...

†[ ] Transliteration in Arabic script.

†[شری سکندر بخت : نہیں - نہیں - چوان صاحب کے پاس سے وہ محکمہ چلا گیا ہے ... "مداخلت" ...]

SHRI VIREN J. SHAH (Maharashtra): Madam, the Hon. Home Minister can respond to it. The intensive bureau is with the Home Minister. ... *(Interruptions)* ..,

SHRI V. NARAYANASAMY (Foadicherry): Madam, during Zero Hour normally we cannot insist on it. *U* the Ministe,- wants to react he can react.

*(Interruptions)*

AN HON. MEMBER; Madam, the Matter is so serious that the Prime Minister should come and inform the liouse.

SHRI DIGVIJAY SINGH: Madam, We wanted to have a substantial discussion, but.....................

........................................,

SHRI V. NARAYANASAMY: Let Us discuss Jammu land Kashmir problem. We are prepared.

**श्रीमती सुषमा स्वराज** : मैडम, इतनी शंकाएं सामने आई हैं, इतनी जिज्ञासाएं आई हैं, इतने प्रश्न आए हैं, अगर इनका उत्तर नहीं देंगे तो इस बहस का मायने क्या हैं ...(**व्यवधान**)

**उपसभापति** : आप प्रधानमंत्री जी को बता देंगे, जो आपने कहा हैं।

**श्री दिग्विजय सिंह** : मैडम, यही कह दें कि प्रधानमंत्री जी को बाद में लाकर बुलवा देंगे। आप कुछ, तो बोलिए।... (**व्यवधान**)...

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): Madam, you have given a ruling several times that you cannot force any Minister in Zero Hour. (I*ntrruptions*). .

SHRl INDER KUMAR GUJRAL (Bihar): Madam, I have been sitting here all the time, listening to the discussion. The points have been made by all sides of the House, including the Congressmen. Therefore, the issue is of great importance. The Home Minister may be technically right that it is not on the agenda; it should not be taken up. But the issue is not technical. The issue concerns the nation and it is in the interest of the Government—leave us, all out and it is in the interest of the Govemment—to take the country into confidence and tell the country what it wants to do. We are expressing our concern, and that concern and anxiety is shared by the whole nation. It is not only because of Chrar-e-Sharief but also because of certain steps being taken by the Government at the moment— I am neither opposing them nor supporting them—I- am saying that th. stage has come when' this vital debate should be shared by the nation as a whole and, therefore, the Government should take the country into confidence. You have taken certain steps which some of us think are positive, which some others of us think are negative. That is not the issue. The issue basically is that you are taking up a major issue which concerns the stability of the. nation, which concerns the unity of the nation, which concerns the future of the nation, and. if I may have the compunction to sav -which concerns the entire internat'onal polity at the moment. So. I think, whether today re next Monday the Government shold come out with a very consi-dered statement It will be in the Government's interest and the country deserves it. Thank youo Maditi

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI S. B. CHAVAN): Madam, I have heard with rapt attention the views expressed by both the sides of the House. Hon. Members are definitely within their rights to raise all kinds of issues. But my difficulty is that during Zero Hour we don't get any kind of notice that this issue is going to be raised to which an instantaneous reply has to be given. So long as we have the information we can possible react to it' otherwise, it becomes very difficult to react to such an important issue. When the Prime Minister himself has said that he is going to come out with some kind of a statement on Kashmir before the House, you will get a full opportunity for discussing the issues which are, in fact, involved in this. There are one or two other aspects. *(Interruptions)* ..

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam,..

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let him finish. Jaipalji, I will allow you. Let him first finish.

SHRI S. B. CHAVAN: This was the information which my esteemed colleague, Shri Bhuvnesh Chaturvedi, had given me that the Prime Minister himself had committed to make a statement on Kashmir and then the hon. Members would get a full opportunity for discussing all the aspects of the question.

Madam, while participating in the discussion, some of the hon. Members have created an impression as if one thing is being said by the Prime Minister and the very next day the Home Ministry is saying something totally different, in spite of the fact that the Prime Minister has clarified that in what we are saying, whether he is saying or T am saying., there Is no point of difference. In fact, it is only the language which differs; other-wise there is no difference of opinion

[Shri S. B. Chavan]

as far as this aspect of the question is concerned. While replying to the President's Address... *(Interruptions)* ...

**श्री जनेश्वर मिश्र:** जब रेल मिनिस्टर और होम मिनिस्टर एक सवाल को अलग-अलग बोल रहे हों तो उस पर तो... **(व्यवधान)** . . .

**श्रीमती सुषमा स्वराज** : कबीना मंत्री और राज्य मंत्री में अंतर है। प्रधान मंत्री और गृह मंत्री में अंतर हो या न हो, कबीना मंत्री और राज्य मंत्री के डिफरेंसिस आफ ओपीनियन तो जग-जाहिर है ।

**उपसभापति** : अच्छा, इन्हें बोलने तो दें ।

SHRI S. B. CHAVAN; Some of the hon. Members have said that the Prime Minister said, "We are going to take possession of the area which, in fact, is in possession of Pakistan". Somebody had alleged that he had made this announcement from the Red Fort, That was what was being alleged I had heard the speech. I was present there. *(Interruptions)* ...

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA (Uttar Pradesh): We have also passed a Resolution.

SHRI S. B. CHAVAN; You can find put what the facts are. He merely said that some people would like to say that the entire Jammu and Kashmir, area was a disputed area. He said, "Jammu and Kashmir is not disputed. What is disputed is the part which is occupied by Pakistan." that is what he has said. *(Interrup. tions* .

SHRI INDER KUMAR GUJARAL: That is also not disputed . • . *(Interruptions').:*

SHRl S. B. CHAVAN: No. I distinctly remember as to what he had said, *(Interruptions)* ...

SHRI DIGVIJAY SINGH: We also have some memory. It w;as telecast live. *(Interruptions)...*

SHRI MD. SALIM: It was telecast live. Doordarshan is having the cassette. *(Interruptions)* ..

SHRI INDER KUMAR GUJRAL; Kindly give me a minute. Please give me a minute. *(Interruptions)...*

**उपसभापति** : उन्हें बोलने तो दीजिए। **(व्यवधान)** . . वह तो रिकार्ड में होगा, उस पर झगड़ा करने की क्या जरूरत है। . . . **(व्यवधान)** . . .

SHRl INDER KUMAR GUJRAL; I have great respect for my friend, the Home Minister. *(Interruptions)...*

**श्रीमती सुषमा स्वराज** : वह बहुत अच्छा कहा था ।

**प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा** : वह तो अच्छा कहा था और उसको स्ट्रिक करना चाहिए ।

SHRI INDER KUMAR GUJRAL: 1 have great respect for my friend, the Home Minister. He is a seasoned public man. I would urge him not to get into this extemporaneously. I would tell him what he is saying Will create more problems. I am only saying this, and it is the correct fact that even the land under the occupation of Pakistan is not a disputed territory. It is our territory. That is the point- So, please don't get into it. (Interruptions) ...

SHRl S. B. CHAIRMAN: No, no. I don't think that I hive conceded that that area belongs to Pakistan. I think I have said that the disputed

No territory is a disputed territory.

SHRI S. B. CHAVAN: Anyway, statement you will get a full opport-when the Prime Minister makes the such an important issue should not be discussed during Zero Hour. Let a unity for discussing all the aspects of the question and that is why separate notice be given and all aspects will come before the House, territory is not the area which is now under our possession. There is no question about it. *(Interruptions)*

SHRI INDER KUMAR GUJRAL:

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam. ... *(Interruptions).*

SHRl VIREN J. SHAH: Madam, there was a question about the failure of the Intelligence .Bureau. It comes under the Home Ministry. The Home Minister can enlighten the Houese at least, to the extent. We would like to know to what extent the Intelligence Bureau and other agencies failed to warn us on time about what was going to happen in Charar-e-Sharief. *(Interruptions).*

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam, the Home Minister has already stated that the Prime Minister would make a statement. *{Interruptions)* .

SHRI CHIMANBHAI MEHTA: Madam, the Prime Minister. ... *(Interruptions)* .

SHRI V. NARAYANASAMY: The Home Minister has already. ... (In-terruptions).

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, a major incident took place yesterday, in the Valley of Kashmir. A serious situation is obtaining there today. The Government should have prepared itself *sua motu* to make a statement. If the Government is not prepared to respond, how can the situation improve? *(Interruptions).* It has never happened before. *(Interruptions')* .

SYED SIBTEY RAZI: Madam the Home Minister has very categorically stated that the Prime Minister will make a statement. *(Interruptions)* .

SHRI DIGVIJAY SINGH: When?

SOME HON. MEMBERS: When?

**श्री दिग्विजय सिंह** : मैडम, चार दिन के लिए सदन उठ जाएगा । पांच दिन तक इस देश को कोई जानकारी नहीं मिलेगी । पांच दिन तक यह सदन बन्द रहेगा । पांच दिन तक देश खामोश बैठ ले इस सवाल पर ? गृह मंत्री जी आप बताइए, आज की शाम तक आप बयान देंगे ? ...(व्यवधान)...पांच दिन तक सदन नहीं बैठेगा मैडम । पांच दिन तक यह देश अंधकार में रहेगा कि कश्मीर में क्या हुआ ? लोगों के घर जला दिए गए । देश के एक हिस्से में कब्जा किए हुए बैठे हैं, विदेशी नागरिक को यह अधिकार है सरकार खामोश है और गृह मंत्री जी कहते है कि समय आने पर हम जवाब दे देंगे । मैडम, हम चाहते हैं कि पांच बजे के पहले गृह मंत्री जी यहां जवाब दें ।

**प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा** : सेफ पैसेज की क्या बात है, वह भी ऐक्सप्लेन करें । ...(व्यवधान).....

**उपसभापति** : देखिए, समय कम है । एक-एक करके बोलिए ।

**प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा** : मैडम, आप डायरेक्शन दीजिए कि यह बयान आज पांच बजे से पहले होना चाहिए कि वहां क्या हुआ ?..(व्यवधान)..

**उपसभापति** : मैं जनरली डायरेक्शन देती नहीं ।

श्री दिग्विजय सिंह : मैडम, यह सवाल राष्ट्रीय सवाल है और पांच दिन तक सदन नहीं बैठेगा इसलिए आज इसका जवाब जरूर होना चाहिए । पांचवें दिन हम लोग मिल रहे हैं । अगर हम लोगों को उसका जवाब नहीं मिला ..(व्यवधान) वे कह रहे हैं कि इसका क्या मतलब है ? ...(व्यवधान)....

उपसभापति : सिब्ते रजी साहब, आप क्या कह रहे हैं ?

SYED SIBTEY RAZI; The Home Minister has himself said that there will be a statement. *(Interruptions).*

SHRI DIGVIJAY SINGH: When? SHRI

DIGVIJAY SINGH: When?

श्री दिग्विजय सिंह : मैडम, हमारा (मुद्दा ही बिलकुल अलग है ।.... व्यवधान)....

SYED SIBTEY RAZI: Madam, the Home Minister has already said that there will be a statement. So many things are involved in it. *(Interrup-tios)* . They cannot compel the Government to bring a statement at 5 o'clock on such an important issue. *(Interruptions).* They are going beyond the limits.

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam, I am on a point of order.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Yes.

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam, during Zero Hour we raise several issues in this House.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Narayanasamy, I know that point.

SHRI V. NARAYANASAMY; Madam, I want your ruling. Madam, during Zero Hour we raise isome issues. Some of the Ministers 'respond to those issues and some of them do not respond to those issues. Madam, you yourself observed. "I cannot compel the Minister. If they want to respond let them respond."

THE DEPUTY CHAIRMAN: That is exactly what I am doing. What am I doing, Mr. Narayanasamy? If I want, I can compel. But, I am not doing it. Why are you reminding me? I cannot understand that.

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam, I would like to know....

THE DEPUTY CHAIRMAN: If you want me to compel the Minister, I will do that.

SHRI V. NARAYANASAMY; Ma-dam, this has become a daily affairs. *(Interr-uptions)* .

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. *(Interruptions).*

Mr. Narayanasamy, I have not finished Narayanasamy, I have not finished. Mr. Narayanasamy, please. I have; heard it for one-and-half hours_ It is a serious matter. I am sure the Government is also concerned about it- Hundreds of houses have been burnt. You cannot realise what the situation would be. People are living in terror. That is why all the Members and even the Congress Members are concerned about it. The

Government is equally concerned auout it. Now you are saying some-ching which I have not done. It is within my right *to* tell the Government to compel them. But I am not *vii.ag* it_ 1 never use it So, don't talk about something which I am not doing. Just keep quiet. Let me handle it in my own way. Just keep quiet. •. *(Interruptions)* ....

SHRI S. JAIPAL, REDDY: Madam, the Prime Minister is going to make a statement On the whole of the Kashmir issue This morning we did *not* discuss tthe whole of Kashmir tsue, though we broadly touched upon any other things. We want a response primarily on yesterday's incident and today's situation. There is a need for concrete response and immediate response. Any Government would have come prepared with a statement. ..*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jaipal Reddy, please one second. We have to adjourn for lunch. There is no point in everybody repeating the same thing. Everybody has heard everyone else patiently, including me, the Home Minister and Mr. Bhuv-nesh Chaturvedi who is, perhaps, in charge of Kashmir Affairs in the PM'g office.

SHRI S. JAIPAL REDDY; 'Perhaps' is not the word you can use.... *(.Interruptions)*.. .

THE DEPUTY CHAIRMAN: I do not know how the PMO's work is distributed. I cannot categorically say about who is doing what. I should not say it. I am not being told as to who is doing what. I cannot give such information from the Chair. V am not competing anyone to say '.something. Having said this, T would like to tell the Home Minister and I would also like to tell Mr. Bhnvnesh Chaturvedy that the matter is serious. There was one point which was raiseu, which was apart from terrorism, apart from the reli gious peaces being occupied, etc.,—all that should be taken care of and action should be taken—and that was regarding the people whose houses have been burnt. Rupees five thou sand is being given which is not sufficient at all.. The Government can, at least, announee that. Some thing can be done about that. At least, by this evening you can come and tell us something about it. On humanitarian grounds, at least, some thing about it. On humanitarian gounds, at least, something should be done.

THE MINISTER OF STATE IN THE PRIME MINISTERS OFFICE (SHRI BHUVNESH CHATURVEDI): Madam, we agree and stand by your direction and advice. The Government will certainly consider it and enhance the compensation.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Rupees five thousand, in today's terms, after devaluation, amounts to nothing. The Finance Minister will never buy anything!

**श्री जनेश्वर मिश्र (उत्तर प्रदेश) :** मैडम, मैं एक निवेदन बहुत विनम्रता-पूर्वक करूगा । यह बात बहुत उत्तेजना की थी फिर भी शांतिपूर्ण ढग से चल रही थी । गृह मंत्री जी ने इस पूरी बातचीत में दखल दे करके प्रधानमंत्री जी ने लाल किले पर तिरंगा फहराते समय जो भाषण दिया था, उस भाषण को गृह मंत्री जी ने डिस्प्यूट में लाकर खड़ा कर दिया है। हम लोगों ने सूना है, टेलीविजन पर देखा हैं कि उन्होंने भाषण करते हुए कहा था कि कश्मीर का जो हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में चला गया है, उसको हम वापस लेंगे । लेकिन गृह मंत्री जी ने इसको डिस्प्यूट में लाकर खड़ा कर दिया है,

[श्री जनेश्वर मिश्र]

उसी तरह से जिस तरह से टाडा के बारे में प्रधानमंत्री जी ने जो इस सदन में कहा उसके दूसरे ही दिन गृह मंत्री जी ने कुछ इस तरह का संदेश दिया कि यह उससे उल्टे किस्म का कदम है । अगर प्रधानमंत्री के उस भाषण को, जो उन्होंने लाल किले पर झंडा फहराते समय दि था, उसको भी झुटला दें या उसको डिस्प्यूट में ला दे तो स पर मुझे खेद एतराज है । अगर माननीय सदस्य प्रधानमंत्री के वक्तव्य को मानते हैं और दूसरे दिन गृह मंत्री का दूसरे किस्म का वक्तव्य आ जाए तो यह बड़ा शोभनीय काम हो जाएगा, इस देश के जनतंत्र के लिए, यह ऐतराज मैं नोट कराना चाहता हूं ।

**उपसभापति :** इस बारे में तो हाउस में यूनेनिमस रेजोल्यूशन पास हुआ है । दोनों हाउस में ऐसा रेजोल्यूशन पास है ।

**श्री जनेश्वर मिश्र :** इन्होंने जो कहा है, उस पर मैं कह रहा हूं ।

**उपसभापति :** इसमें कोई दो राय नहीं है कि कश्मीर का जो हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में है, जिसको पी.ओ.के. कहते हैं, पाकिस्तान आक्युपाइड कश्मीर

**श्री जनेश्वर मिश्र :** इन्होंने जो कहा है उस पर मैंने अपना ऐतराज नोट कराया है ।

**उपसभापति :** मैं तो हमेशा कहती हूं कि इसको खाली कराना है ।

The House then adjourned for lunch at thirty-five minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-seven minutes past two of the clock,

The Vice-Chairman (Shri Suresh Pachouri) in the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SURESH PACHOURI): We will now take up the Zero Hour submissions.

## RH. NON-UTILISATION OF RS. 394 CROSS ALLOTTED FOR D.E.S.U.

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): Vice-Chaiman, Sir, I would like to raise an issue relating to Delhi. It is a matter of concern that in Delhi, people who are living, not in the areas where the Members of Parliament are living, but in the urban and semi-urban areas, and espscially in the rural areas, are experiencing power cuts everyday. But, unfortunately, the BJP Government which rules the Capital Territory of

Delhi and which was allotted Rs. 394 crores by the Government of India for the purpose of making improvements in DESU, failed to utilise this amount and the funds have been surrendered It shows the inefficiency and also the lack of experience on the part of the Government in not being able to utilise the funds for the purpose for which these were given. Sir, it was not in the year, 1994-95 alone, but we know pretty well that even in the year, 1993-94, an amount of Rs. 40 crores remained unutilised and the funds lapsed.

I would like to mention that there are six projects; here—Pappankalan I & II, Shastri Park, (Nangloi Water Treatment Plant, Wazirabad Water Treatment Plant and Rohini Extension—I. These are the areas where power stations have to be set up for purposes of power generation and transmission by the State Government of Delhi. But, unfortunately, the Chief Minister is busy in trying